thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

उग्र ज्योतिः चक्रथु आर्याय — आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ०७ ● १७ फरवरी, २०१५ फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी, सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११५

ऋषि बोध पर्व विशेषांक

हमें महर्षि दयानन्द का ऋण चुकाने का संकल्प लेना है

–देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान

प्रतिवर्ष हम आर्यजन महर्षि दयानन्द सरस्वती का बोधपर्व (महाशिवरात्रि) धूमधाम से मनाते हैं। वेद प्रवचन होते हैं, शोभायात्रायें निकाली जाती हैं। परंतु आज भी ढोंग पाखण्ड बढ़ता जा रहा है, सामाजिक समरसता करूण क्रन्दन कर रही है। धर्म के नाम पर विभिन्न मतावलम्बी अपना व्यापार बढ़ा रहे हैं। धर्म का स्थान अधर्म लेता जा रहा है। सुधीजन प्रायः इस पर विचार मन्थन करते रहते हैं परंतु परिणाम शून्य ही सा है। हम जब इस पर विचार करेंगे तो पायेंगे कि आज आर्य समाज आन्दोलन गतिहीन हो गया है। हम केवल अन्यों की भांति हवन सत्संग में बोल व सुनकर अपना काम पूर्ण मान रहे हैं। हमारे देश के वरिष्ठ विद्वान मनीषी नेता महामना मदन मोहन मालवीय ने इस प्रसंग में बोलते हुए कहा था कि जब तक आर्य समाज का आन्दोलन तीव्र गति से चलता रहेगा तब तक समाज उसके पीछे दौड़ता रहेगा जब आर्य समाज आन्दोलन धीरे चलेगा तो समाज ठहर जायेगा और जब आर्य समाज आन्दोलन रूकेगा तो समाज सो जायेगा। उनका यह कथन आज पूरी तरह से सत्य सिद्ध हो रहा है।

आज देश में आर्य समाजों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है, सत्संगों की संख्या भी उसी के अनुसार बढ़ रही है परन्तु महर्षि के मन्तव्यों का भारत नहीं बन रहा निरन्तर गिरावट की ओर जा रहा है। भारतीय संस्कृति सभ्यता का पाश्चात्य कुसंस्कृति उनका विनाश करने में लगी है। आज ऋषि बोध पर्व पर हम इस पर गंभीर चिन्तन और मनन करेंगे। चिन्तन से हमें पता चलेगा कि हम अन्यों की भांति केवल सत्संगों की रश्म अदायगी करने में लग रहे हैं स्वयं सत्संग नहीं कर रहे हैं। दयानन्द के आत्म चिन्तन ने देश की दुर्व्यवस्था पर ध्यान दयानन्द जी का खींचा उन्होंने ढोंग पाखण्ड, जाति पांति छुआछूत का भेद, नारी शोषण उसको दासी बनाने की वृत्ति को जाना और उसके विरूद्ध गर्जना की और अंतिम श्वास तक दुरवस्था मुक्त स्वाधीन भारत बनाने के लिए लगे रहे। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना आन्दोलन के रूप में की। वेदपथ पर चलने का संदेश दिया। हमने उनका संदेश सुना आन्दोलन में जुटे। बुराइयां थमने लगी ढोंग पाखण्ड के गढ़ ढहने लगे इससे ढोंग पाखण्ड से धनार्जन करके महन्त व धनी बनने वालों के मनों में धबराहट होने लगी। ऋषि दयानन्द के विरूद्ध अनेक लांछन लगाये, उनको विष दिया, शारीरिक पीड़ा दी व उन्हें ईसाइयों का एजेन्ट तक कहा परंतु ऋषि पीछे नहीं हटे।

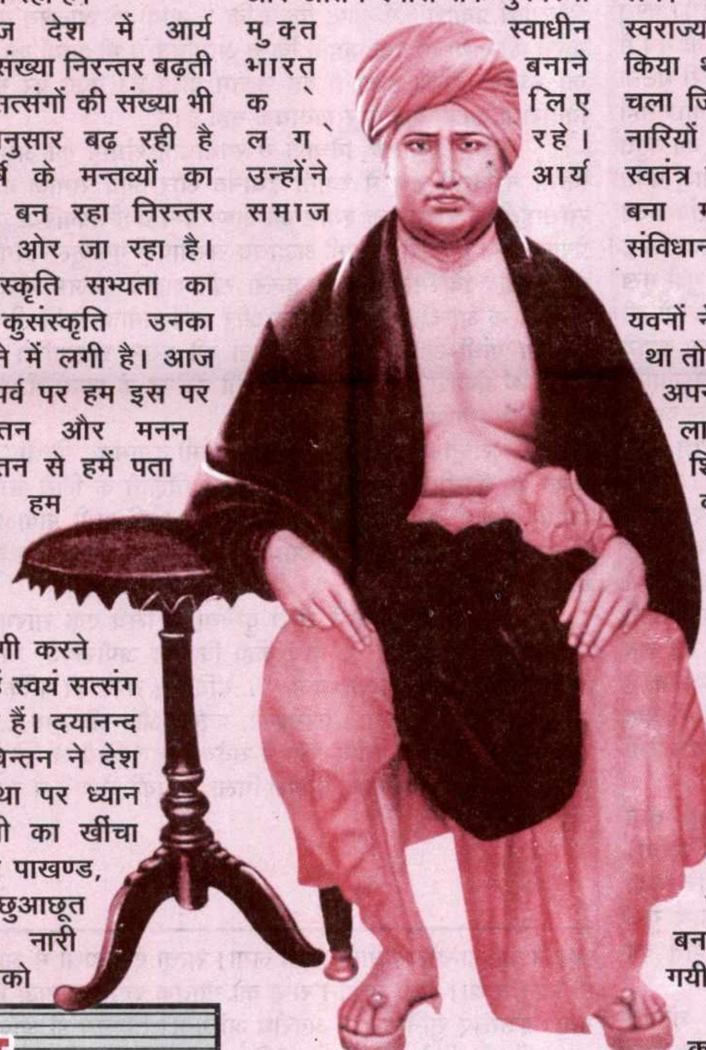

शिक्षा प्रसार के लिए गुरूकुल विद्यालय खुले जिसमें बालक बालिकायें सुशिक्षित होने लगे। दयानन्द ने ही सर्वप्रथम स्वराज्य के अधिकार का उद्घोष किया था। स्वराज्य आन्दोलन चला जिसमें सर्वाधिक आर्य नर नारियों ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। अपना संविधान बना महर्षि की सभी बातें संविधान में समाहित की गयी।

हमारे देश को विदेशी यवनों ने लूट कर कंगाल बनाया था तो अंग्रेज लुटेरों ने हमें सदा अपना गुलाम रखने के लिए लार्ड मैकाले द्वारा बनाई शिक्षा चलाई जिसे पढ़कर व्यक्ति रोजी रोटी के अलावा और कुछ सोचने का विवेक नहीं पाता। हमने स्वराज्य आन्दोलन की तीव्रता से देश अंग्रेजों से आजाद तो करा लिया परंतु सत्ता की कुर्सी पर बैठने वाले नेताओं ने देश की भौतिक समृद्धि बढ़ाने में अपना ध्यान केन्द्रित कर लिया। शिक्षा व्यवस्था गुलाम बनाने की ही चालू रखी गयी।

आर्य समाज के कर्णधारों ने आजादी पाने के बाद अपना दायित्व संभवतः पूर्ण मान लिया। आर्य समाज आन्दोलन की गति धीमी हो गयी। फलतः वे सभी बुराइयां नये नये रूप में बढ़ने लगी। आज नारी शिक्षित भी है स्वतंत्र भी है परंतु सुरक्षित नहीं है। आज डिग्रीधारी बहुत है परंतु शिक्षा का अभाव है। जाति पांति का भेद सत्ता सुख के लिए बढ़ता जा रहा है। भ्रष्टाचार, अनाचार तेजी पर है। काली कमाई जोरशोर से बढ़ रही है। कन्या भ्रूण हत्यायें, दहेज हत्यायें और गरीबों का शोषण बढ़ रहा है। ढोंग पाखण्ड पहले से ज्यादा बढ़ रहा है।

अस्तु महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके सम्पूर्ण सुख से पूर्ण सुसंगठित भारत राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया था और अपनी सारी जिम्मेदारी हम आर्यो को विरासत के रूप में सौंप दी थी।

हम जागे अपने दायित्व को समझें और स्वीकार करें। उन्होंने आर्य समाज के नियम बनाकर उन्हें अपने जीवन में पूरी तरह से अपनाकर आनन्दमय जीवन, आनन्दमय समाज, आनन्दमय राष्ट्र व आनन्दमय विश्व बनाने की दिशा दी थी। हम सभी आर्य नर नारी आज उनके बोध पर्व पर अपने जीवन की दिशा पर विचार करें। अपने ऊपर ऋषि द्वारा दी गयी जिम्मेदारियों का अहसास करें और उन्हें पूर्ण करने का संकल्प लें। हम सभी आज से ही आत्म मन्थन आरम्भ करें। आर्य समाज के नियमों का अपने जीवन में अनुपालन करते हुये बिना किसी पार्टीबन्दी बैर विरोध के संगठित सिपाही के रूप में राष्ट्रोत्थान के लिए कृत संकल्प हो। हमारा संकल्प निश्चय ही हमें सफलता दिलायेगा। हम आज से ही आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलाने में जुट जाये। उसमें कतई शिथिलता न आने पाये। देश में पनपती सभी बुराइयों का निष्पक्ष विरोध करें। दोषों की जननी विदेशी शिक्षा व्यवस्था बदलकर वैदिक शिक्षा (जिसमें सम्पूर्ण विज्ञान समाहित है) दिलाने का सरकार पर दबाव बनाये। निश्चय ही आन्दोलन रंग लायेगा। सभी बुराइयां मिटेंगी। सर्वदोष मुक्त सुखी स्वाधीन भारत बनकर हम महर्षि दयानन्द का ऋण चुकाने में समर्थ बनेंगे।

-आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

वेदामृतम्

ऋषी बोध प्रतिबोधवस्वप्नो यश्च. जागृविः।
तौ ते प्राणस्य मोप्तारो दिवा नवृतं च जागृताम्।।

....अथर्व-५.३०.१०

(ऋषी) दो देखने वाले (यः) जो एक एक (अस्वप्नः) न सोने वाला (च) और (जागृविः) जगाने वाला (तै) तेरे (प्राणस्य) प्राण को (मोप्तारो) रख वाले (तौ) वह दोनों (दिवा) दिन (च) और (वक्तं) रात (जागृताम्) जागते रहो।

मनुष्य विवेक और चेतना पूर्वक नित्य सावधान रहकर रक्षा करे। बोध और प्रतिबोध दो देखने वाले हैं। जो एक न सोने वाला और जागने वाला है। हमारे प्राण के ये दोनों रखवाले दिन रात जागते रहें। व्यक्ति को बन्धन के कारणों का बोध तो हो गया मगर यदि उसने उन्हें दूर करने के लिए प्रयास नहीं किया तो वह बन्धन से नहीं छूट सकेगा।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

ऋषि बोध पर्व पर हम आत्म चिंतन करें और दायित्व को पूर्ण करने का संकल्प लें

प्रतिवर्ष शिवरात्रि का महापर्व फाल्गुन मास में मनाया जाता है। इस दिन शिव भक्त व्रतोपवास करके मंदिरों में जाकर रात्रि जागरण करके शिवार्चन करते हैं। इसी परम्परा में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १४ वर्ष की अल्पायु में बालक मूलशंकर के रूप में अपने पूज्य पिता जी श्री कर्शन जी तिवारी जो अनन्य शिव उपासक थे-के आदेश से व्रत उपवास किया। मंदिर में शिवार्चन हेतु गये। रात्रि जागरण का अनुष्ठान किया। चूंकि उन्हें कथा सुनायी गयी थी कि इस दिन जो निराहार व्रत उपवास करता व रात्रि जागरण करता है-उसे महादेव के दर्शन होते हैं और महादेव उसकी सारी कामनायें पूर्ण करते हैं।

रात्रि बढ़ने लगी, सभी उपासक निद्रा में लीन हो गये। उनके पिताजी भी सो गये परंतु बालक मूलशंकर शिवदर्शनार्थ आंखों में पानी के छींटे डाल डाल कर जागता रहा। शिवपिंडी पर शिव के साक्षात दर्शन के लिए एकटक दृष्टि गड़ा दी।

रात्रि की नीरवता बढ़ते ही शिव पिंडी पर एक चूहा आकर सभी अर्ध्य वस्तुओं को खाने व छितराने लगा। मूलशंकर ने और सावधान होकर शिव पिंडी पर निगाह गड़ा दी, पहले तो सोचा कि अब शंकर जी इस उत्पाती का पाशुपत अस्त्र से विनाश कर के इसके कुकृत्य का समुचित दण्ड देंगे। परंतु काफी देर हो गयी चूहे का स्वच्छन्द उत्पात होता रहा तो मूलशंकर के मन में संशय उत्पन्न होने लगा। पिताजी को जगाकर बड़ी विनम्रता से सारी घटना बताकर कहा कि पिताजी घर में मैंने जो कथा सुनी थी वैसा यहां कुछ नहीं दिखाई पड़ रहा है-क्या कारण है। पिताजी ने बालक के गंभीर प्रश्न को बहुत साधारण रूप में लेकर उत्तर दिया कि बेटा साक्षात शिव तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं यह तो उनकी मूर्ति है। बस इसी उत्तर ने बालक मूल शंकर को सच्चे शिव के दर्शन की लालसा उत्पन्न करा दी। वे मंदिर से घर लौट आये। अपना भूखा रहने का व्रत तोड़कर मां से आग्रह किया कि मां मुझे भूख लगी है खाने को दो। भोजन किया। विश्राम के कक्ष में चले गये। दर्शनों की प्रबल आकांक्षा उन्हें चेताती रही। फलतः एक दिन वे किसी को बिना बताये घर से रात्रि में ही अपना लक्ष्य पाने के लिए निकल पड़े। बड़े बड़े झंझावातों से निकलते हुये अनेक साधु संतों से शंका समाधान करते हुए जंगल जंगल पर्वत श्रृंखलाओं से भटकते हुए अन्ततः उन्हें मथुरा में प्रज्ञाचक्षु गुरू विरजानन्द जी दण्डी के चरणों में पहुँचकर सत्यज्ञान की प्राप्ति का सुयोग मिला। इस भ्रमण काल में ही उन्होंने सन्यास की दीक्षा ली और स्वामी दयानन्द नाम पाया था। जब गुरू के द्वार पर पहुंच कर दस्तक दी तो अंदर से गुरूजी ने पूछा कौन है, उत्तर दिया कि यही जानने तो मैं आपके चरणों मे आया हूँ। गुरू जी ने द्वार खोला। दयानन्द ने अपना परिचय देकर अपनी जिज्ञासा बतायी। गुरूदेव ने पूछा तुमने क्या पढ़ा हैं, दयानन्द ने वह सब बताया फिर गुरू देव ने कहा कि अभी तक तुमने जो पढ़ा है वह अवैदिक है अपनी अभिलाषा पूर्ण करने के लिए वह अपनी पढ़ाई जमुना जी में बहा आओ फिर मेरे पास पढ़ने आओ, खाने व रहने की व्यवस्था तुम्हें स्वयं करनी होगी।

स्वामी दयानन्द ने गुरू का आदेश स्वीकार करके लगभग साढ़े तीन वर्ष सांगोपांग अध्ययन करके सच्चे शिव के दर्शन का मार्ग प्राप्त किया। अध्ययन के अनन्तर गुरू दक्षिणा के रूप में अपना सारा जीवन सारे विश्व की सम्पूर्ण मानव जाति को जागृत करने व प्राणिमात्र के कल्याणार्थ गुरू चरणों में सौंप दिया। गुरूदेव ने सर पर हाथ रखकर संकल्पपूर्ति का आशीर्वाद दिया।

देश उस समय अंग्रेजों की पराधीनता से ग्रस्त था। नारी शोषित प्रताडित थी उसे वेद पढ़ने का ही अधिकार नहीं था। वह दासी बनकर जीवन जी रही थी। घनघोर अविद्या का अन्धकार था, छुआछूत जन जन में व्याप्त था, मूर्तिपूजा ही प्रभु पूजा बन गयी थी। ढोंग पाखण्ड ही पूजा का स्वरूप बन गया था। देव दयानन्द के गुरू चरणों से प्रांजल जीवन ने अपनी दिव्य दृष्टि से यह सब देखा और विचारा कि राष्ट्र की अधोगति व पराधीनता के यहीं सब कारण है। बस दृढ़ निश्चय किया कि इन सभी दोषों से अपने राष्ट्र को मुक्त बनाकर हमें सर्व तंत्र स्वतंत्र भारत बनाना है। सारे विश्व को सुख शान्ति व समृद्धि से परिपूर्ण बनाकर ही विराम लेना है। महर्षि दयानन्द ने इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना करके उसे आन्दोलन नाम दिया। वेद ज्ञान को मानव निर्माण का मूल मंत्र घोषित किया। नारी को मातृशक्ति के नाम से उद्घोषित किया। उनके शिष्य पं. श्याम कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, पं. लेखराम आर्य पथिक, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी आदि उच्च कोटि के विद्वान नेताओं क्रांतिकारियों के निर्लेप चरित्र के माध्यम से सम्पूर्ण देश में आर्य समाज आन्दोलन तीव्र गति से चला। विकृतियां नष्ट होने लगी। स्वाधीनता आन्दोलन चला जिसमें आर्य नर नारियों ने निष्ठा से भाग लिया। आन्दोलन तीव्रता से चलाकर देश को स्वाधीन कराया। देश स्वाधीन हुआ। अपना संविधान बना, संविधान में महर्षि दयानन्द के सभी मन्तव्य समाहित किये गये ताकि भारत सुख समृद्धि से पूर्ण स्वाधीन राष्ट्र होकर सारे विश्व को मार्ग दर्शन देने में समर्थ रहें।

आजादी के बाद शायद हमने सोचा कि हमारा काम पूर्ण हो गया-आर्य समाज का आन्दोलन धीमा पड़ने लगा। सत्ता ऐसे हाथों में आयी जिन्हें भारतीय दर्शन, वैदिक संस्कृति का रंचमात्र भी ज्ञान न था। अतः उन्होंने राष्ट्र को भौतिक रूप से समृद्ध बनाने में ही पूरा ध्यान लगा दिया। निर्माण एकांगी हो गया। इसलिए सुनिर्माण में अवरोध आ गया। निश्चय ही आज हम भौतिक साधनों में विश्व में अपना विशेष स्थान बनाने में समर्थ हो रहे है परंतु नैतिकता का दिनोदिन ह्रास हो रहा है। ऊपर से नीचे तक हमारा स्वार्थपूर्ति, धन लिप्सा, कुर्सी लिप्सा का लक्ष्य प्रमुखता से बन रहा है। फलतः भ्रष्टाचार, अनाचार, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्यायें हो रही है। देश व प्रदेश की जनता जनार्दन की समृद्धि का लक्ष्य धूल धूसरित हो रहा है। सभी कल्याणकारी मोहक योजनायें जन मानस के कल्याण में न लगाकर कतिपय लोगों की समृद्धि का कारण बन रही है।

आशा यह की जानी चाहिए कि आर्य समाज के नेता, कार्यकर्ता इस देश को इस संक्रमण काल से निकालकर राष्ट्र को सुदिशा देने में समर्थ बनेंगे। परंतु हमारे अंदर भी पद लिप्सा, पार्टीबन्दी, अपना हित साधने की कुत्सित भावना पनपने लगी है। फलतः आज आर्य समाज का क्रान्तिकारी आन्दोलन शिथिल हो गया है। पदों के झगड़ो को निपटाने, न्यायालयों में अधिकार पाने की लड़ाई लड़ने में हमारी श्रम, शक्ति व धन का अपव्यय हो रहा है। राष्ट्र निर्माण सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना क्षीण हो रही है। प्रत्येक पर्व हमें अपना मार्गदर्शन के लिए ही आते हैं। ऋषि बोध पर्व महाशिवरात्रि पर्व आज हमें जगा रहा है, ऋषि दयानन्द जब आये थे तब सर्वत्र अज्ञान रूपी अंधेरा था। उन्होंने आज के ही दिन ज्ञान प्राप्त करके अंधकार ढोंग पाखण्ड को मिटाकर वेद ज्ञान प्राप्ति का सुगम मार्ग दिखाया था। सबको सच्चे शिव का बोध कराया था। जन जन में जागृति उत्पन्न करके स्वराज्य का पथ सुझाया था। आज हमारा देश स्वतंत्र है परंतु ऋषि की भावना के अनुरूप भारत नहीं बन रहा है वह दिवास्वप्न सा लग रहा है।

आइये हम विचार करें कि इसके पीछे क्या कारण है। आत्म चिन्तन करने पर यह पता लगेगा कि हम स्वयं ऋषि मन्तव्यों को मनसा वाचा कर्मणा अंगीकार नहीं कर रहे हैं। इनके छोड़े दायित्व को निभाने में आलस्य और प्रमाद कर रहे हैं। अस्तु! आज हम सभी इस लक्ष्यपूर्ति के लिये कृत संकल्प हो अपने को सच्चा आर्य बनाये व सच्चा आर्य बनकर आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलाने का संकल्प लें। निश्चय ही हमारा यह संकल्प सफलता देगा। आर्य समाज आन्दोलन तीव्र गति से चलेगा। वैदिक संस्कृति का आधान होगा। ढोंग पाखण्ड, अनाचार, भ्रष्टाचार, नारी शोषण जैसे अपराधों पर अंकुश लगेगा। महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के अनुकूल सुख समृद्धि से सुसमृद्ध सुगठित भारत बनकर सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शक बनने में समर्थ बनेगा।

सम्पादक

स्वामी दयानंद सरस्वती का युगान्तकारी अपूर्व आह्वान

-प्रकाश नारायण शास्त्री

१५वीं शती के उत्तरार्द्ध में भारतीय नवजागरण के सूत्रधार स्वामी दयानंद ने जब समाज सुधार के निमित्त कार्य क्षेत्र में पदार्पण किया उस समय देश का वातावरण तिमिराच्छन्न था, सैकड़ो साल की पराधीनता सांस्कृतिक पतन का चरम और धर्म के नाम पर पाखण्ड तथा सामाजिक जीवन में नाना प्रकार की कुरीतियाँ व्याप्त थीं। कुल मिलाकर देखा जाय तो यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र आत्मविस्मृति के दौर से गुजर रहा था।

युग प्रवर्तक स्वामी दयानंद का जन्म सन् १८२४ ईस्वी में गुजरात प्रान्त के काठियावाड़ प्रभाग के तत्कालीन मौरवी रियासत के अन्तर्गत टंकारा ग्राम में हुआ था, शैव मतावलम्बी-पिता कर्शन जी लाल जी तिवारी औदिच्य ब्राह्मण थे। परिवार की परम्परानुसार उन्हें संस्कृत, व्याकरण तथा वेद आदि की शिक्षा मिली थी।

स्वामी दयानंद ने तत्कालीन सामाजिक जीवन में व्याप्त कुरीतियों पर करारा प्रहार किया, छुआछूत, बाल विवाह, स्त्री पुरूषों की असमानता, विधवा विवाह निषेध, मृतक श्राद्ध तथा जड़ पूजा आदि विकृतियों से सामाजिक दशा चिंतनीय हो गयी थी इन सभी के विरूद्ध उन्होंने आवाज लगायी और समाज को आन्दोलित किया उनकी तर्कपूर्ण वक्तृता और बौद्धिक चिंतन ने समाज में अपूर्व जागरण का सूत्रपात किया। फ्रान्स के मनीषी रोमा रोला के अनुसार - '' दयानंद ने स्त्री पुरुषों की समानता की आवाज लगायी तथा जन्मना जाति-पाति का विरोध किया, उनसे बढ़कर दलितों के हितों का रक्षक दूसरा कोई कठिनाई से मिलेगा।

यही नहीं राजस्थान के अनेक देशी राजाओं से मिलकर उन्हें भी सुधार कार्य के निमित्त आगे आने के लिये स्वामी जी ने प्रोत्साहित किया, जिसका प्रभाव हुआ कि कई राजाओं ने प्रशासन में हिन्दी में कार्य करने के लिये आदेश दिये। पशुबलि प्रथा रूकवाने में भी उन्हें सफलता मिली। रायपुर चितौड़ उदयपुर, शाहपुर और मसूदा आदि राज्यों में स्वयं जाकर स्वामी जी ने हिन्दी को बढ़ावा देने के साथ स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग तथा राजकुमारों को अपनी संस्कृति के अनुरूप शिक्षा और संस्कार दिलानें के लिये राजाओं को प्रभावित किया।

स्वामी दयानंद पराधीनता के चंगुल से देश को मुक्त कराना चाहते थे इसलिये उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में स्पष्ट किया कि '' आर्यो के आलस्य प्रमाद और परस्पर द्वेष के कारण अन्य देशों पर राज्य करने की कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यो का अखण्ड राज्य इस समय नहीं है। कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह उत्तम होता है। प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।''

स्वामी जी के विचारों ने स्वधीनता संग्राम को अभूतपूर्व दिशा दी, स्वराज्य और स्वदेशी आन्दोलन को किसी न किसी रूप में स्वामी दयानंद और आर्य समाज का मार्गदर्शन सुलभ था। लंदन में स्थापित होम रूल सोसाईटी के संस्थापक श्याम जी कृष्ण वर्मा क्रान्तिकारियों के पितामह कहे जाते हैं उन्हें स्वामी दयानंद से सबल प्रेरणा प्राप्त हुयी थी। स्वामी श्रद्धानंद संस्थापक गुरूकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, लाला लाजपत राय, भाई परमानंद राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला खाँ, शहीदे आजम भगत सिंह, उनके चाचा अजीत सिंह आदि सभी स्वामी दयानंद के आन्दोलन से प्रभावित और आर्य समाज से किसी न किसी रूप में सम्बन्धित थे। लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी आदि नेता स्वामी जी की प्रखर राष्ट्रभक्ति से प्रभावित थे। दादाभाई नौरोजी ने स्वराज्य शब्द ''सत्यार्थ प्रकाश'' से सीखा था। एनी बेसेण्ट के शब्दों में - ''दयानंद पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीयों के लिये भारत की घोषणा की थी''।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से स्वामी दयानंद ''हिन्दी'' के पक्षपाती थे जिसे वह अपने शब्दों में ''आर्य भाषा'' कहते थे, हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिलाने के लिये अंग्रेज सरकार द्वारा नियुक्त हण्टर कमीशन को उन्होंने जगह-जगह से स्मरणपत्र भिजवाये थे। देश की सभी भाषाओं का सम्मान करने के बावजूद राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के लिये उनका विशेष आग्रह था। स्वराज्य आन्दोलन के दिनों में आर्य समाज हिन्दी और स्वदेशी का पर्याय बन गया था।

स्वामी दयानंद ने सारी दुनिया के लिये एक सारभूत तथा अपूर्व आह्वान किया था - वह आह्वान था- ''वेदों की ओर लौटो'' उन्होंने कहा कि वेद अपौरूषेय, निर्भ्रान्त एवं दिव्यज्ञान के भण्डार हैं, इसी परिप्रेक्ष्य में योगिराज अरविन्द का कहना है '' ...यदि हम सन्त को यत्किंचित समझना चाहते हैं तो हमे सत्ता के तीन अस्तित्व को स्वीकार करना होगा - परमेश्वर, प्रकृति और जीवात्मा.... वेदों की अन्तिम व्याख्या कोई भी हो दयानंद उसके सत्य सूत्रों के आविष्कर्ता के रूप में सदैव आदृत किये जायेंगे।'' वस्तुतः स्वामी दयानंद की वेद सम्बन्धी स्थापनाओं से लोगों को एक चमत्कारी प्रकाश मिला जिसकी रोशनी में वे श्रेष्ठ मानव बननें की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं।

सी १५/३४५ ए, लल्लापुरा
(अभिषेक विद्यायलन परिसर),
वाराणसी

thearyasamaj.org

टंकारा दिग्दर्शन

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द जी का जन्मगृह–

टंकारा ग्राम के बाजार जाने वाली सड़क पर यह स्थान भव्य रूप में स्थापित है पहले चित्रों में सामान्य खपरैल का छप्पर नुमा घर था अब उसे भव्य बनाया गया है। उसी स्थान में उनके पूरे जीवन की चित्र प्रदर्शनी शोभा बढ़ा रही है लोग श्रद्धा के साथ पढ़ते हुए चित्र देखकर महर्षि की महिमा कर गुणगान करते है एक कोने में सुन्दर गर्भगृह बनाया हुआ है उसमें स्वामी जी की कुछ वस्तुएं सुरक्षित है एक पत्रिका भी है लोग अपने विचार एवं भाव लिखकर अपनी श्रद्धाजंली एवं संकल्प लेते हैं। अतिथियों एवं सन्यासियों के आवास की व्यवस्था भी ऊपर हाल में है आंगन से बाहर कोने में एक कार्यालय हेतु कक्ष है जहां कोई भी अधिकृत व्यक्ति लोगों की समय-समय पर शंका समाधान करता रहता है।

महर्षि दयानन्द गौशाला–

ग्राम से बाहर की ओर एक वृहद गौशाला है जिसमें सैकड़ों की संख्या में गोवंश है बछड़ी-बछड़े साण्ड एवं गौओं को स्नेहपूर्वक देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई व्यक्तियों को देखकर वे डरती नहीं अपितु मिलने के लिए आती है लगता है लोग उन्हें कुछ खिलाने पिलाने के लिए समय-समय पर सामान लाते होगे कर्मचारियों से वार्ता करके व्यवस्था सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की। पुनः पास में स्थित वह शिव मन्दिर देखा।

शिव मन्दिर -

थी रात अन्धेरी आई –
आकर आवाज लगाई –

दरवाजा तो खोलो मेरे माई वो शिव जी मिला नहीं।।

माँ मेरी ....

आर्य समाज के महोपदेशक चौ० पृथ्वीसिंह बेधड़क का भजन बचपन से सुनते सुनाते आ रहे थे उसे साक्षात् देखने का अवसर मिला। मन्दिर छोटा है इतना बड़ा नहीं जो हमारी कल्पना थी। सब उसी को मान रहे हैं हमने भी मान लिया और वहाँ बैठकर सन्ध्या की प्रभु से प्रार्थना की हे प्रभु हमारे गुरुवर को अपने यहां ज्ञान दिया हमें भी कुछ ज्ञान के छीटें लगाओ कुछ देर के पश्चात पुनः टंकारा ट्रस्ट द्वारा बनाया गया स्मारक स्थान पर आ गये।

भव्य यज्ञशाला–

वहाँ प्रवेश करते ही बाई ओर भव्य यज्ञशाला है जहाँ दोनों समय प्रतिदिन यज्ञ होता है यज्ञशाला में बैठकर शान्ति की प्राप्ति हुई और यज्ञ में भाग लिया बैठने की व्यवस्था भी शोभनीय सुन्दर एवं सुदृढ़ता के साथ गरिमा से युक्त होकर दानी महानुभावों का यशगान कर रही है ओ३म् पताका फहरा रही है इसके लिए सहगल जी का आर्य जगत को आभारी होना अपेक्षित है जिन्होंने जीर्णोद्वार से लेकर आधुनिक स्वरूप में सुन्दरता प्रदान की है बड़े-बड़े अधिकारी एवं नेता यज्ञ करके अपने सौभाग्य का वर्द्धन करते है।

राजा–रानी का महल–

विशिष्ट अधिकारी निवास के रूप में आज उसका प्रयोग हो रहा है सहगल जी तिवारी जी तथा अन्य ट्रस्टी सब इसी महल में ठहरते है लकड़ी का जीना और कुछ पुराने मकान भी लकड़ी के ही थे कलाकारी सुन्दर है सुन्दर एवं लम्बी आयु का महल है।

अतिथि निवास–

अतिथि निवास हेतु कई वार्ड बनाये है -

पं० लेखराम भवन, पं० गुरुदत्त भवन, आदि-आदि बहुमंजिले आधुनिक सुविधाओं से युक्त कक्ष है जिसमें हजारों लोगों के ठहरने की व्यवस्था रहती है कितना भी बना लें फिर भी स्थान कम ही रहेगा क्योंकि लोगों की आस्था बढ़ रही है और जन संख्या वृद्धि तो है ही इसका प्रभाव ऋषि मेला पर भी अवश्य होगा।

छात्रावास एवं विद्यालय भवन–

लगभग ३०० छात्रों के रहने का स्थान छात्रावास में है सुन्दर सुरक्षित सुव्यवस्थित स्थान है। सुन्दर पाठशाला है अच्छी व्यायामशाला का वर्णन आपने पढ़ लिया है मुख्य द्वार घण्टाघर-बाजार दुकान मैदान एवं मंच प्रदर्शनी कम्प्यूटर कक्ष संगीत प्रशिक्षण केन्द्र आदि-आदि स्थानों को भौतिक रूप से देखकर लग रहा था अभी और आवश्यकता है छात्रों की संख्या बढेगी स्थान कम लगने लगेगा। उसके लिए ट्रस्टी मुम्बई अबरोल जी सहित एवं सहगल जी के सहयोगी इसे यथाशीघ्र और सुन्दर बनायेगे ऐसा विश्वास है।

शोभायात्रा एवं सम्मेलन–

जीवन में बहुत शोभायात्राओं में गए हैं पर जो आनन्द टंकारा की शोभायात्रा में आता है वह कहीं नहीं मिला जबकि यहां ग्राम स्तर की गलियाँ है सफाई भी अनुरूप नहीं, मार्ग में सन्तरे या शहरो की तरह खाने को कुछ नही लेकिन उत्साह- संयोजन देखने ही योग्य रहता है लगता है पता नहीं किस-किस गली में मूलशंकर घूम रहे होंगे उनके चरणों से पवित्र गलियाँ ही तो तीर्थ हैं। ग्राम में मुस्लमानों की भी संख्या है पर वे भी मूलशंकर के प्रति अभिभूत है वे कहते हैं वह बालक यदि सन्यासी दयानन्द न बनता तो आज टंकारा ग्राम को कौन जान पाता। ग्राम के लोग अभिभूत होकर श्रद्धा से पानी-शर्बत पिलाते है और पूरी शोभायात्रा को मनोयोग से देखते हैं। उसका समापन आर्य समाज मन्दिर टंकारा पर होता है कभी स्मारक भवन पर ही होता है कीर्त्तन भजन नारे लगने में प्रत्येक आर्य अपने को दूसरे से अधिक श्रद्धालु मानकर अपना ऋण उतारने के लिए यहां आता है।

सम्मेलन एवं श्रद्धांजलि सभा–

यह सम्मेलन ही टंकारा यात्रा का सार होता है यही शिवरात्रि का दिन होता है इसी के विषय में कहा है - एजी एजी हमारी कौन पूछता बात- अगर न आती टंकारा में शिवरात-हमारी कौन ......

इस श्रद्धांजलि सभा में प्रतिवर्ष एक राष्ट्रीय स्तर का नेता आकर अपनी श्रद्धांजलि देता है एक राष्ट्रीय स्तर विद्वान का भाषण देता है एक/दो सन्यासियों को सम्मानित भी किया जाता है भजनों पदेशकों का भी प्रभावशाली गीत होता है गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के बौद्धिक एवं शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन कार्यक्रम प्रभावीशाली रहते है। मुझे वहां के योग्य आचार्य एवं कर्मठ संचालक के प्रति आस्था बढ़ी जो अपना तन-मन-धन सब कुछ अर्पण करके अपने जीवन को सार्थक कर रहे हैं वे वास्तव में धन्य है वे लोग भी धन्य है जो आर्थिक सहयोग करके वहा कार्यकर्त्ता-अधिकारी-कर्मचारी आचार्यो का मनोबल बढ़ाते हैं।

पूरे भारतवर्ष को यदि एक स्थान पर एक समय में आप देखना चाहते हैं तो टंकारा आ जाओं मुम्बई से कलकत्ता तथा मद्रास चेन्नई से उत्तराखण्ड हिमाचल- राजस्थान, हरयाणा, दिल्ली, उ०प्र० सभी प्रान्तों के प्रतिनिधि अधिकारियों के दर्शन सहज भाव से ही हो जाते हैं। जो भी टंकारा जायेगा वह प्रफुल्लित मन से श्रद्धा से संकल्प से युक्त होकर आयेगा जैसे हज यात्रा करके मुसलमान अपने को पवित्र मानता है वैसे ही टंकारा यात्रा करके आर्य अपने को सौभाग्यशाली अनुभव करता है। टंकारा की यात्रा सभी आर्यो में ऊर्जा प्रदान करती रहे यही प्रभु से प्रार्थना है।

संचालक-गुरुकुल पूठ

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती)

गढ़ मुक्तेश्वर (हापुड़) का वार्षिक महासम्मेलन समारोह

१३, १४, १५ मार्च २०१५

(दिन-शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

प्रिय महोदय,

आपके प्रिय गुरूकुल पूठ का वार्षिक महासम्मेलन दिनांक १३, १४, १५ मार्च २०१५ को कुलभूमि में उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। जिनमें आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान, महात्मा, नेता एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अतः आपसे अनुरोध है कि आप अपने इष्ट मित्रें सहित अधिक से अधिक संख्या में दर्शन देकर धर्म लाभ उठायें।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

६ मार्च से स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न होगा। इसके संयोजक कुलदीप आचार्य जी रहेंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति १५ मार्च को प्रातः १० बजे होगी। यजमान बनने के इच्छुक सज्जन सम्पर्क करें।

आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन

१४, १५ मार्च को गुरूकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन ज्ञानेन्द्र गांधी जी की अध्यक्षता में किया जायेगा। संयोजक राजीव आचार्य जी रहेंगे। जिसमें आसन, व्यायाम, दण्ड बैठक, लाठी स्तूप शब्दभेदी बाण, धनुर्विद्या प्रदर्शन एवं प्राणायाम द्वारा सरिया मोड़ना, जंजीर तोड़ना आदि आदि मुख्य होंगे।

कार्यक्रम प्रतिदिन

१३, १४, १५ मार्च २०१५		शुक्रवार, शनिवार, रविवार
प्रातः	७ से ११ बजे	यज्ञ प्रवचन सत्संग
मध्यान्ह	१ से ५ बजे तक	भजन प्रवचन-व्यायाम प्रदर्शन
रात्रि	८ से ११ बजे तक	भजन सम्मेलन-प्रवचन

यह गुरूकुल गढ़मुक्तेश्वर से डहराकुटी होते हुए पूठ गंगा किनारे पर स्थित है, गढ़ से बसें मिलती है। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए आपका हर प्रकार का सहयोग अपेक्षित है। ऋषि भंडारे हेतु आटा, दाल, चावल, चीनी आदि दान देकर पुण्य के भागी बनें।

thearyasamaj.org

"महर्षि दयानन्द सरस्वती का ऋषित्व"

विद्यावाचस्पति वेद पाल वर्मा शास्त्री

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज विश्व का महान् ऋषि है।

२. टंकारा भूमि के विलक्षण मूलशंकर नामक महर्षि ने शंकर का शुद्ध मूलरूप प्रकाशित कर विश्व का महान् उपकार किया है। लोक कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है।

३. देशी तथा विदेशी विद्वानों द्वारा कृत अनर्गल-अशुद्ध वेदभाष्यों का शुद्धिकरण कर वेदों की रक्षा की है।

४. राष्ट्र-वेदना उनके हृदय में थी। इसी हेतु महर्षि ने राष्ट्र के स्वातन्त्र्य धर्म को वेदों से ग्रहण कर, अंग्रेजों को ललकारा और देश स्वतंत्र हुआ।

५. स्त्री-शूद्रों-दलितों को यज्ञ करने का तथा वेद पढ़ने का अधिकार दिलाकर, विधवाओं का उपकार किया है।

६. वेदाधारित महर्षि कहते थे कि याज्ञिक चरित्रवान् राजा ही प्रजा का हित करता है। उसी से राष्ट्र की संप्रभुता कायम रहती है। वहां कोई कंगाल नहीं रहता है। उस राज्य में कोई किसी का ऋणी नहीं रहता।

७. जिस देश का ऋत्विक् राजा यज्ञशाला में प्रजा के साथ बैठकर वेदमंत्रों से गौ-घृत की आहुति देता है- वहां भौतिक तथा आध्यात्मिक विज्ञान से परोपकार का उदय होता रहता है। उस देश की राष्ट्रभाषा भी एक होती है। वहां सम्प्रदायवाद नहीं ठहरता।

८. ईश्वर प्रेमी वेदपाठी राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र की सीमा का उल्लंघन नहीं करता। वहां समय पर बादल बरसते हैं, यज्ञ की सुगन्धि से प्रजा नीरोग रहती है। राष्ट्र-सम्पदा में वृद्धि होती है। वहां की सन्तान दीर्घायु-यशस्वी-आस्तिक तथा संस्कारवान् रहती है।

९. महर्षि की शिक्षा पद्धति से गुरुकुलों-गुरुकुल विश्व विद्यालयों की स्थापना हुई है। जहां से श्रद्धानन्द से शहीद सेनानी महात्माओं का विकास हुआ है।

१०. जनसाधारण को महर्षि ने बताया कि अहिंसा-धर्म चारों वेदों का शान्ति-पुरस्कार है तथा जीवात्मा का प्रधान गुणधर्म भी अहिंसा है।

११. अहिंसा से प्राणी कायर-कमजोर व नपुंसक नहीं होता, वह परोपकारी वीर होता है। निर्भय होता है क्योंकि उसकी आत्मा में वेद-ईश्वर का बास रहता है। जिस पुरुष की आत्मा में ईश्वर का आवास है उसे भय किसका ?अहिंसा में पुरुषार्थ छिपा है।

१२. चारों वेदों के अहिंसा भाव का प्रतिपादन करते हुए महर्षि कहते हैं कि - जंगल में हिंसक प्राणी और पशु-पक्षी सभी साम-संगीत सुनने के लिये ऋषि-मुनियों की तपस्थली के निकट बैठे हुए वेद-गान के आनन्द का रस पीते रहते हैं। पशु-पक्षियों की आत्मा भी अहिंसा की ही पुजारी होती है।

१३. पत्थर पूजकों के भारी प्रलोभनों से महर्षि नहीं पसीजे, उन्हीं के दिये विष-प्याले पीकर भी महर्षि विश्व को वेद के प्रकाश से प्रकाशित करने में आस्तिक धर्म की रक्षा करते रहे हैं।

१४. महीर्ष कहते थे मैं ऐसे राष्ट्र-पिता का याज्ञिक पुत्र हूँ जहां से कोई प्रलोभन मुझे वेद के प्रचार-प्रसार मार्ग से हटा नहीं सकता।

१५. वेद उनके हृदय में गूंज रहे थे। उनका उद्घोष था, केवल वाणी के उच्चारण से संसार ऊँचा नहीं बनता, उसे क्रियात्मक रूप देने से ही राष्ट्रों का कल्याण होता है।

१६. जहां वेद का प्रकाश रहता है वहां अन्धकार नहीं ठहरता। पत्थर-पूजक चक्राक्तों ने उन पर हजारों बार बर्जो-लाठी डण्डों से बौछार की थी-परन्तु महर्षि के संयमी - त्यागी - तपस्वी बलिदानी जीवन से बल्लम-भालों और गालियों की बौछार पुष्पवर्षा में परिवर्तित होती रही।

१७. महाभारत से लेकर आजतक महर्षि के समान वेदों से आपूर्ण संयमी आत्मा उत्पन्न नहीं हुई।

१८. पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि वर्तमान में ५ हजार यज्ञ कराने वाले निरक्षर ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी ने लाक्षागृह बरनावा (मेरठ) के टीले की यज्ञवेदी के समाधि स्थल से महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज के ऋषि-रूप में ही पिछले १३(तेरह) जन्मों का विवरण दिया है। जहां मैं और मेरे गुरु आर्य महाविद्यालय गुरूकुल किरठल (मेरठ) के सुयोग्य स्नातक श्री शीतल देव जी सेनानी (जिमाना गुलियान) भी वहीं समाधि स्थल पर उपस्थित थे। उस समय वे लाक्षागृह गुरूकुल के कोषाध्यक्ष थे।

१६. ऋषि का प्रवचन है कि '' वेद निष्कामभाव, स्वस्ति और कल्याण का श्रेयमार्ग है इस पर दृढ़ रहो आनन्द रस मिलेगा।

२०. आदिकाल के ऋषि-महर्षियों के समान महर्षि भी कहते थे कि आत्मवेत्ता पुरुष ईश्वर के दर्शन करता है।

२१. महर्षि ईश्वर जीव प्रकृति त्रैतवाद के विवेचन में लगे रहे।

२२. तप-त्याग-सत्य-संयम-योग-ब्रह्मचर्य परोपकार पूर्ण पुरुषार्थ से महर्षि में ऋषित्व के लक्षण प्रकाशित हो रहे थे।

२३. महर्षि के हजारों शहीदों शिष्यों में रामप्रसाद बिस्मिल ने एक सज्जन को ''आर्याभिविनय'' पुस्तक देते हुए कहा - इसका एक मंत्र रोज महर्षि दयानन्द के भाष्य के साथ पढ़ो, तुम्हें उस राष्ट्र-भूमि के दर्शन होंगे जो स्वर्ग से भी ऊँची है। वह हमारे तुम्हारे कण-कण में रमी है। आज वह विदेशियों की दासता में है।

२४. महर्षि कहते थे- रामानुज-वल्लभ-निम्बार्क-माध व इन चार मतों ने देश का सत्यानाश कर रक्खा है।

२५. मूर्ति-पूजक प्रार्थना करते थे-महर्षि ! हमारी दो बात मान लो। मूर्तिपूजा और पुराणों का खण्डन न करो। ऐसा करने से हमारी आजीविका समाप्त हो जायेगी। साथ-साथ आक्षेप भी करते थे महर्षि पादरियों का नौकर है- और हिन्दू धर्म को बिगाड़ रहा है।

२६. मृत्यु का उन्हें पूर्वाभास था। मेरठ में बहुत बार कहा था- हम १८८४ नहीं देख पायेंगे।

२७. महर्षि कहते थे- वेदमंत्रों के बिना हृदय अशुद्ध हो जाता है। प्रेम-रज्जू से वेदऋचाओं का ज्ञान प्राप्त करो। ईश्वर हमारा परम उपकारी बन्धु है, विजय की माला उसी के हाथ में है। ''यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः'' ७-६०-७ ऋक्।।

२८. संसार उनमें ऋषि शब्द का लक्षण पढ़ रहा था। पूर्ण उन्नत उच्चभाल स्पष्ट वाणी पूर्ण उन्नत आत्मा पूर्ण उन्नत शरीर पूर्ण ब्रह्मचारी- पूर्ण योगी - परोपकारी। (अमर शहीद लेखराम)।

२६. अन्धकार में डूबे भारत को स्वस्ति और शान्ति की ज्योति दिलाने वाला महर्षि दयानन्द सरस्वती इस युग का महर्षि था। अपनी मौन शिक्षा से पं० गुरूदत्त का कायाकल्प कर गया।

३०. अन्त समय में महर्षि ने वेदमंत्र गाते हुए अपने शिष्यों से कहा- ''आप सब सार्वभौम वेद के सुगन्धित याज्ञिक बने रहो''। ऋषि के ये वाक्य सदैव वायु मण्डल में क्रान्ति करते रहेंगे।

-मालदाबाग, पुरानी गुड़मण्डी
शाहपुर, मुजफ्फरनगर

लखनऊ नगर आर्य समाज का १२२वाँ वार्षिकोत्सव

दिनांक १४ फरवरी २०१५ से आरम्भ

दनांक १७ फरवरी २०१५ को विशाल शोभा यात्रा

नगर आर्य समाज, लखनऊ का १२२वाँ वार्षिकोत्सव ऋषि जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव दिनांक १४, १५, १६ फरवरी दिन शनिवार, रविवार व सोमवार को बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के अन्तर्गत दिनांक १७ फरवरी २०१५ दिन मंगलवार समय मध्यान्ह २ बजे विशाल शोभा यात्रा दयानन्द बाल सदन, मोती नगर लखनऊ से आरम्भ होकर नाका हिण्डोला, गणेशगंज, अमीनाबाद होते हुए नगर आर्य समाज रकाबगंज में समाप्त होगी।

उक्त वार्षिकोत्सव में श्रीमती ऋचायोगमयी खगडियाँ बिहार, आचार्य संजीव रूप आर्य, बदायूं उ.प्र. एवं आचार्य संतोष वेदालंकार लखनऊ आदि पधार रहे हैं। विशेष कार्यक्रम में ऋषि दयानन्द के जन्म उत्सव पर भण्डारा मध्यान्ह १२ बजे एवं ऋषि लंगर दिनांक १६ फरवरी अपरान्ह ११.३० पर होगा।

वार्षिकोत्सव में प्रातःकालीन सत्र में प्रातः ५:४५ से ६:०० बजे तक संध्या, प्रातः ६:१५ से ७:१५ तक योग की कक्षा, प्रातः ७:३० से ६:०० बजे तक यज्ञ, प्रातः ६:०० बजे से ६:१५ तक जलपान एवं प्रातः ६:१५ से १०:४५ तक भजन व प्रवचन आमंत्रित विद्वानों के होंगे। दिनांक १७ फरवरी २०१५ को यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

रितेश रस्तोगी
मंत्री (कार्यवाहक)

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आत्मिक दर्द

पं० उम्मेद सिंह विशारद

जन साधारण का विचार है कि परमात्मा अवतार धारणा करके पृथ्वी पर जन्म लेते हैं, यह अज्ञान है, क्योंकि अजन्मा, अव्यय, निराकार, सृष्टिकर्ता ईश्वर साकार कैसे हो सकता है। किन्तु यह भी सत्य है कि मोक्ष से लौट कर मुक्त आत्मा अधर्म का नाश करने के लिये संसार में जन्म लेती है। संसार में मुख्य जन्म दो प्रकार का होता है। एक कर्मबद्ध जीवन और दूसरा कर्मो के बन्धनों से मुक्त जीवन। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम योगीराज श्रीकृष्ण में व महर्षि दयानन्द सरस्वती में अन्तर था तो वह यह था कि श्री राम व श्री कृष्ण जीवन भर सत्य के लिये लड़े, कामनाओं के लिये लड़े तथा महर्षि दयानन्द ऋत व निष्काम के लिये लड़े व मरे। यह विचारणीय बात है।

इस लेख में मैंने कुछ महर्षि दयानन्द जी के आत्मीम दर्दो का उल्लेख किया है। सुधी पाठक प्रेरणा लेकर अन्यों को भी प्रेरित करेंगे।

नरबली अंधविश्वास का दर्द

महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि एक दिन की घटना को मैं भूल नहीं सकता। शाम होने वाली थी, सामने नदी थी और अमावस्या की रात जाने वाली थी, सोचा रात किस रूप में बिताऊँ। इतने में दूर से आवाजें आ रही थी, एक दस वर्ष के बालक को लोग नहला रहे थे और स्त्री पुरुष नाच रहे थे, मैं जिज्ञासावश वहाँ पहुँचा, पता चला आज अमावस्या है और महाकाली की गुफा में मध्य रात्रि को इस बालक की बलि दी जायेगी। इसके माता-पिता का वंश धन्य हो जायेगा और इसके पिता को पुजारियों ने पचास रूपये दिये थे और मान्यता थी कि यह बालक देह छोड़कर गन्धर्व लोक चला जायेगा।

इस बात को सुनकर मेरे मन में तीन चिन्ताएं हुई-

१. मेरी माता ने मुझ पुत्र को खोकर ही देहत्याग किया था। यह माता अपने बालक का बलिदान देखकर कैसे जीवित रहेगी।

२. इस महापाप के दण्ड भोग के लिये ही हमारी पुण्य भूमि धीरे-धीरे विदेशी वणिकों के बन्धन में जा रही है।

३. धर्म के नाम पर ऐसे महापाप ऋषि मुनियों के देश में कैसे चालू हो गये। यह काल भैरव मन्दिर फतेहपुर के धर्मपुरी पुनघाट में स्थित है। इस शोभा यात्रा में मैं भी चलने लगा। अवसर देखकर पुरोहित से कहा इस बालक को छोड़ दो और मेरी बलि दे दो। मैं भी ब्राह्मण पुत्र हूँ। पुजारी बोले बड़े पुजारी की आज्ञा से ही विचार किया जा सकता है। वहाँ भयंकर भीड़ थी, चार आदमी नंगी कटार लेकर नाच रहे थे। मेरी प्रार्थना स्वीकार हो गयी। मुझे नहला कर कुमकुम लगाया गया। खड्ग की पूजा हुई। काल भैरव के सम्मुख काठ की वेदी में मेरा सिर रखकर पुरोहित पाठ करने लगे। चारों ओर काल भैरव की जय के नारे लगने लगे। मैं चारों ओर देखकर मरने के लिये तैयार हो गया। पुरोहित ने कान में मुंह लगाकर मंत्र पाठ किया और खड्ग घातक के हाथों में दे दिया। मेरी आँखों में कसकर पट्टी बाँधी गयी, बस बलिदान बाकी था।

लेकिन अचानक बन्दूक की तीन गोलियों की आवाज आयी, साथ ही लोग भागने लगे, चिल्लाकर कहने लगे, मरहटी फौज आ गयी है। सभी भाग गये। मैं अकेला बलिदान लकड़ से बंधा रह गया। उसी समय सिपाहियों ने मुझे मुक्त कर दिया। पता चला महाराष्ट्र सरकार ने बलि प्रथा पर प्रतिबन्ध लगा रखा है और यह अमावस्या में मन्दिरों में भ्रमण करते हैं। मैंने ईश्वर से कहा हे प्रभु मुझसे क्या कराना चाहते हैं। जो कि आप बार-बार मुझे प्राण दे रहे हैं।

गंगा किनारे घटिया घाट की घटना का दर्द

महर्षि दयानन्द एक बार फर्रुखाबाद के निकट घटिया घाट के किनारे ध्यान मग्न बैठे थे। उसी समय एक स्त्री अपने मरे हुए बच्चे को लेकर आयी और उसने अपने मरे हुए बच्चे को पानी में डाल दिया। छपाक की आवाज से महर्षि का ध्यान उस ओर गया और देखा कि वह स्त्री बच्चे का कफन उतार रही है। कफन उतारकर चलने लगी तो महर्षि ने हाथ जोड़कर कहा मां गंगा में क्या डाल दिया। उस स्त्री ने रोते हुए कहा कि यह मेरा लड़का है। मैं विधवा स्त्री हूँ, निर्धन हूँ। धनाभाव से इसका इलाज न करा सकी। महर्षि ने कहा, जिस ईश्वर ने दुःख दिया, वही सुख भी देगा। परन्तु आपने कफन क्यों उतारा है। स्त्री ने कहा मैं निर्धन हूँ, कफन के लिए मेरे पास धन नहीं था। इसलिए अपनी साड़ी को आधा फाड़कर कफन बना लिया था। मैने सोचा बच्चा तो वापिस आयेगा नहीं मुझे तो यहीं रहना है तो समाज में नग्न कैसे रहूँगी। इसलिए मैंने कफन उतार लिया इसे फिर से साड़ी से जोड़ दूँगी। ऋषिवर का हृदय द्रवित हो गया, आँखों में आँसू बह निकले। पता चलता है कि ऋषि के दिल में देश व समाज के प्रति कितनी वेदना थी।

एक हूक सी दिल में उठती है, एक दर्द जिगर में होता है।

हम रात को उठकर रोते हैं, जब सार आलम सोता है।

मान्य पाठक, हम ऋषि के किस-किस दर्द की बात करें, वह तो पूर्ण रूप से दर्द निवारक देवता थे। एक छोरे से दर्द का वर्णन और करते हैं।

कोढ़ी को उठाना और उसका दर्द समझना

गुजरात के सोमनाथ मन्दिर में मेला लगा हुआ था, मेले के बाहर एक कोढ़ी पड़ा हुआ था। कोई कहता था मर गया, कोई कहता जिन्दा है, पता चला पुलिस ने मारते-मारते बाहर निकाल दिया है और कोई कहता था पैरों में रस्सी डालकर बाहर नदी किनारे छोड़ दो। मैंने समझ लिया, यह आदमी अभी जिन्दा है। इसके सारे शरीर में खून और पीप निकल रहा है। इसीलिए किसी ने सहायता नहीं दी। मैंने कपड़ा भिगोकर उसके मुंह में पानी डाला, तब उसने आंखे खोल दी थीं, तब तक पुलिस भी पहुँच गयी थी, मैने कहा मेले में चिकित्सा व्यवस्था कहां है और इसको छोड़कर जाना भी ठीक नहीं था। (मैंने सहोसि सहो मयि देहि) मंत्र बोलकर कोढ़ी को पीठ के ऊपर उठाकर चिकित्सा केन्द्र में भर्ती करवा दिया, विदाई के समय उसने कहा बाबा मुझे मरने का आशीर्वाद दो और उसने देह छोड़ दिया। मैंने नदी में स्नान किया और योग गुरूओं की खोज में निकल पड़ा।

महर्षि के अन्य दर्दों का संकेत

मैंने छोटे - छोटे उदाहरण दिये। महर्षि दयानन्द का तो सम्पूर्ण जीवन का दर्द तो सत्य की स्थापना करना था। उन्होंने ईश्वर के सत्य के दर्शन कराये। उन्होंने पंच महायज्ञ के सत्य का ज्ञान दिया। उन्होंने जो मान्यताएं व कर्म मानव समाज को भयंकर हानि पहुँचाते थे-उस दर्द को समझा। जैसे ईश्वर के नाम पर पशु बलि, जाति पांति का छुआछूत का चलन, सती होने की कुप्रथा, विधवा का अभिशाप, कपोल कल्पित पौराणिक अवैदिक अनार्ष ग्रन्थों से मानव मात्र को हानि, मृतक भोज, काल्पनिक देवी देवताओं की पूजा, राष्ट्र की परतन्त्रता का कारण माना और जिन अनेक कुप्रथाओं द्वारा समाज खोखला होता जा रहा था। इस दर्द को समझा और उसका निराकरण भी किया।

युगों बाद धरती पर ऐसे महापुरुषों का आगमन होता है। तभी तो टंकारा की शिवरात्रि बोध रात्रि बन गयी, जिसने सारे संसार का अन्धकार ही मिटा दिया। उस देवता ने एक निरन्तर ऋत सत्य का प्रचार करने हेतु आर्य समाज जैसे सर्वोच्च संगठन का गठन किया। धन्य हो ऋषि दयानन्द आपने अपने को बार-बार विष देने वालों को भी क्षमा करते हुए उनके दर्दो को समझ कर ऋत सत्य के लिये अपने प्राण न्योछावर कर दिये।

-वैदिक प्रचारक, देहरादून

thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन व उसकी प्रासंगिकता

डा. भवानीलाल भारतीय/
श्री जी.एम. माथुर

पृष्ठभूमि :-

अमेरिका की बदनाम महिला पत्रकार मिस कैथराइन मेयो ने अपनी बदनाम पुस्तक 'मदर इण्डिया' में भारतवासियों में शिक्षा के अभाव के लिए यहां किसी भी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था का न होना कारण बताया था १-इस झूठे आरोप का प्रतिवाद करते हुए लाला लाजपतराय ने 'मदर इण्डिया' के जवाब में लिखी अपनी पुस्तक दुखी भारत (Unhappy India) में विस्तापूर्वक भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था की चर्चा की और बताया कि प्राचीन भारत की बात छोड़े जब सर्वत्र गुरूकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी और उच्च शिक्षा के लिए तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्व विद्यालय कार्यरत थे जो न केवल इस देश के अपितु अल्प देशों के हजारों विद्यार्थियों की ज्ञान पिपासा को शान्त करते थे। ग्रामों में भी सर्वत्र पाठशालाएं थी।

मिस मेयो ने भारत में शिक्षा प्रचार का श्रेय अंग्रेजों को दिया किन्तु वह यह बताना भूल गई कि अंग्रेजी शिक्षा के प्रचलन के पीछे शासक जाति का उद्देश्य तो भारत में एक ऐसे वर्ग को उत्पन्न करना था जो शक्ल सूरत, रंगरूप में चाहे हिन्दुस्तानी रहे किन्तु विचारों, भावों तथा बौद्धिक दृष्टि से सर्वथा अंग्रेज बन जाये। अंग्रेजी शिक्षा का मसौदा प्रस्तावित करने वाले लार्ड मैकाले ने तो दावा किया था कि यदि अंग्रेजी शिक्षा विषयक उसकी नीति पर यदि अमल किया जाता रहा तो आने वाले दशकों में ही हम देखेंगे कि प्रचलित हिन्दू धर्म को मानने वालों का अस्तित्व ही संकट में पड़ जायेगा। २ प्रकारान्तर से वह कहना चाहता था कि यह शिक्षा यहां के रहने वालों के परम्परागत धर्म और विश्वासों को उखाड़ फेंकेगी। यही वह समय का जब शासकों ने कलकत्ता (तत्कालीन राजधानी) में एक संस्कृत कॉलेज की स्थापना की योजना बनाई। आश्चर्य है कि इसका विरोध करने वालों में सर्वाधिक मुखर ब्रह्म समाज के संस्थापक और भारतीय नवजागरण के अग्रणी कहे जाने वाले राजा राम मोहनराय थे जिन्होंने तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड एम्हर्स्ट को एक विस्तृत पत्र लिखकर संस्कृत शिक्षा के प्रसार को न केवल अनावश्यक बताया अपितु बिन्दुवार संस्कृत व्याकरण, दर्शन तथा धर्मशास्त्र के अध्ययन की अनुपयोगिता स्थापित थी। ३- ऐसा करने में राजा महोदय की मूल भावना क्या थी, यह कहना कठिन है। सम्भवतः वे चाहते होंगे कि सरकार को संस्कृत की पुरातन शिक्षा का प्रचार करने के बनिस्पत नवीन ज्ञान-विज्ञान, कई तकनीक तथा कला कौशल युक्त लौकिक शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। तथापि वे ऐसा सुझाव चाहे देते परन्तु इसके लिए क्या यह आवश्यक था कि वे संस्कृत शिक्षा की अनुपादेयता की तार-स्वर से घोषणा करते और सरकार को संस्कृत प्रचार के लिए कोई कदम उठाने को प्रतिक्रियावादी कदम बताते। कलकत्ता में संस्कृत कॉलेज की स्थापना हुई-राजा महोदय के विरोध के बावजूद।

राजा महोदय की विचारधारा के प्रतिकूल भारतीय नवजागरण के एक अन्य प्रखर ज्योतिर्धर स्वामी दयानन्द ने न केवल स्वदेशी शिक्षा नीति की रुप रेखा प्रस्तुत की, अपितु भारतीय शिक्षा प्रणाली का एक आदर्श ढांचा भी प्रस्तुत किया। स्वामी दयानन्द के शिक्षा विष्यक विचार उनके प्रमुख ग्रन्थों में उल्लिखित हुए हैं जिन्हें एक सूत्र में पिरोकर व्यवस्थित एवं सम्पूर्ण भारतीय शिक्षा व्यवस्था का नक्शा बनाया जा सकता है। शिक्षा विषयक दयानन्द के विचार सत्यार्थप्रकाश के दूसरे तथा तीसरे समुल्लासों में विस्तार से वर्णित हुए है। द्वितीय समुल्लास से पता चलता है कि लेखक को बाल मनोविज्ञान का सम्यक ज्ञान था।

उन्होंने बालकों के लालन पालन तथा शिक्षित करने में माता-पिता की प्राथमिक भूमिका बताई तथा इस बात पर जोर दिया कि कोमल मस्तिष्क वाले बालकों में प्रारम्भ से ही अच्छे, स्वस्थ तथा रचनात्मक संस्कार डाले जायें। उसके शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के गवाक्ष खुले रहें जिससे उसके व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास हो सके। दयानन्द ने विशेष रूप से माता-पिता को सावधान किया है कि भूतप्रेत, फलित ज्योतिष और जन्म पत्रिका के अंधविश्वासों का खुद शिकार न होकर वे बच्चों के भविष्य को अनावश्यक आशंका कुशंका के कुहुक जाल से ग्रस्त न होने दें। इस प्रकरण से पता चलता है कि दयानन्द सरस्वती ने बालकों के प्रारम्भिक शिक्षण का दायित्व उनके माता-पिता को ही सौपा था।

शास्त्रीय शिक्षा :-

मूलतः एक धर्म प्रचारक, धर्म संशोधक तथा शास्त्र वेत्ता होने के कारण दयानन्द ने जिस शिक्षा नीति को प्रस्तुत किया है वह शास्त्रीय शिक्षण की आदर्श पद्धति है। तथापि वे बालक बालिकाओं को लौकिक शिक्षा (Secular Education) देने के प्रबल समर्थक है। दयानन्द के शिक्षा विषयक सिद्धान्तों को निम्न प्रकार से सूत्रबद्ध किया जा सकता है।

१. दयानन्द प्रत्येक बालक (इसमें बालिका का समावेश है) की अनिवार्य शिक्षा के हामी हैं। उनका कहना है कि यह समाज-नियम तथा राज-नियम होना चाहिए कि एक अवस्था (पांच वर्ष) आने पर प्रत्येक बालक-बालिका को अध्ययनार्थ गुरूकुल में प्रविष्ट करा दिया जाये। साधनहीन माता-पिता यदि बालकों को शिक्षित कराने में असमर्थ हो तो यह दायित्व शासन का है कि वह ऐसे बच्चों की शिक्षा के भार को वहन करे।

२. दयानन्द के समक्ष माता-पिता व परिवार से दूर रहकर बालक को किसी गुरूकुल में शिक्षा देने का आदर्श विद्यमान था। कालान्तर में उनके द्वारा मान्य गुरूकुलीय शिक्षा के आदर्श को स्वामी श्रद्धानन्द (तब महाशय मुंशीराम) ने १६०२ में क्रियान्वित किया जब उन्होंने गंगा के तटवर्ती ग्राम कांगड़ी में आवासीय गुरूकुल की स्थापना की। गुरूकुल प्रणाली की विशेषता और श्रेष्ठता इस कारण है कि इसमें अध्यापक और शिक्षार्थी की निकटता तथा समीपता रहती है। इसलिए छात्र को अध्यापक का मार्गदर्शन एवं अनुशासन सदा उपलब्ध रहता है। वे जब तक गुरूकुल वास करते है तब तक पारिवारिक दायित्वों तथा अन्य प्रकार के अनुचित प्रभावों से मुक्त रह कर अपने अध्ययन को ही सर्वोपरि प्राथमिकता देते हैं।

३. दयानन्द ने नारी शिक्षा को समान महत्व दिया जबकि मध्यकाल में स्त्रियों की शिक्षा को अनावश्यक माना गया था जिसके मैत्रेयी जैसी ब्रह्मवादिनी विदुषियों के जन्म देने वाले देश की नारियां अशिक्षित, असंस्कृत रहें यह विडम्बना नहीं तो क्या थी। दयानन्द के इसी मन्तव्य को पालनार्थ कालान्तर में लाला देवराज ने जालंधर में आर्य कन्या महाविद्यालय स्थापित किया। वहीं स्त्रियों को गुरूकुल शिक्षा प्रणाली से शिक्षित करने के लिए सर्वत्र कन्या गुरूकुल स्थापित किये। आर्यसमाज द्वारा स्थापित गुरूकुल शिक्षा पद्धति का सर्वत्र स्वागत हुआ। इन्हीं गुरूकुलों के आदर्श को अपना कर सनातनी समाज ने ऋषिकुलों की स्थापना की। यहां तक कि जैन मतावलम्बियों ने यत्र-तत्र स्वमत की शिक्षा के लिए जैन गुरूकुल स्थापित किये। यह गुरूकुल प्रणाली की सर्वस्वीकार्यता थी।

४. दयानन्द की मान्यता थी कि शिक्षा के क्षेत्र में धनी और दरिद्र का भेद न रहे। वे इस बात के प्रबल समर्थक थे कि गुरूकुल में राजा का पुत्र और एक दरिद्र का पुत्र समान सुविधा, साधन और व्यवहार का पात्र बनें। ५. वहां जन्म, कुल, सभ्यता के आधार पर किसी प्रकार का भेद भाव न किया जाये। शिक्षा में पक्षपात और अधःपतन के दृश्य तभी सामने आये जब धृतराष्ट्र और पाण्डु पुत्रों-राजकुमारों को शिक्षित करने के लिए द्रोणाचार्य को वेतन तथा सुविधाएं प्रदान कर हस्तिनापुर के राजप्रसाद में रहकर पढ़ाने का आदेश मिला। यों कहें कि वेतनभोगी तथा मालिक की भली-बुरी आज्ञाओं का पालन करने के लिए गुरु को विवश करने और विवश होने वाले आधुनिक अध्यापकों का प्रवर्तन द्रोणाचार्य से ही समझना चाहिए। उनकी यह राजाश्रित पाठशाला ही आज के विश्वविद्यालयों का आदर्श बनी और इस महाभारतीय विश्वविद्यालय का प्रथम ग्रेजुएट दुर्योधन था जिसके कारनामें सबको विदित हैं।

५. दयानन्द के शिक्षा विषयक सिद्धान्त में संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन को सर्वोपरि प्रधानता दी गई थी। साथ ही राष्ट्रभाषा हिन्दी को शिक्षा के माध्यम में प्रयुक्त करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था। यह बात स्मरण रखने योग्य है कि गुरूकुल कांगड़ी ने अपने शैशवकाल (बीसवीं शती के प्रथम दशक) में विज्ञान की विभिन्न शाखाओं पर स्नातक स्तरीय पाठ्य पुस्तकें हिन्दी में तैयार कराई थीं। इस क्रम में रसायन, भौतिकी, गणित, खगोल, प्राणी विज्ञान तथा वनस्पति शास्त्र के अतिरिक्त राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र आदि पर प्रामाणिक पाठ्य ग्रन्थ हिन्दी में तैयार कराये गये।

६. निश्चय ही दयानन्द सरस्वती के पाठ्यक्रम में संस्कृत तथा वैदिक शास्त्रों के अध्ययन को प्राथमिकता दी गई थी। इस क्रम में उन्होंने निम्न बातों पर जोर दिया- १. संस्कृत व्याकरण का अध्ययन पाणिनीय अष्टाध्यायी एवं पातंजल महाभाष्य के आधार पर कराया जाये न कि सिद्धान्त कौमुदी, सारस्वत, शेखर आदि अवान्तरकालीन अनार्ष व्याकरणों की सहायता से। दयानन्द की मान्यता थी कि आर्ष व्याकरण की परिपाटी से यह अध्ययन अल्प श्रम तथा अल्पकाल में हो

शेष पृष्ठ.......7

thearyasamaj.org

पृष्ठ...........6 का शेष

सकेगा जबकि अनार्ष व्याकरणों की सहायता से यह अध्ययन पर्याप्त समय तो लेगा ही, उससे वैसी व्युत्पन्नता नहीं आयेगी जैसी आर्ष प्रणाली को अपनाने से ।

७. स्वामी दयानन्द ने आर्ष ग्रन्थों को अपनाने के लिए न केवल व्याकरण क्षेत्र को चुना अपितु उन्होंने इसे सर्वत्र लागू करने को कहा। धर्म, दर्शन, ज्योतिष, कर्मकाण्ड- वाड्मय की सभी विद्याओं में आर्ष ग्रन्थों को मान्य किया जाये, यह उनका क्रान्तिकारी दृष्टिकोण था। ८ इसमें उनका अभिप्राय आर्ष वाड्मय के उन गुणों को स्थापित करना था जो उनकी दृष्टि में आ चुके थे। यथा, इनकी सरल एवं शीघ्र समझ में आने वाली विवेचन शैली, अंधविश्वासों को प्रश्रय न देकर बुद्धिवाद का प्रतिपाद समर्थन करने का आग्रह आदि इसलिए आर्ष ग्रन्थों का महत्व वे मानते थे।

८. शास्त्रीय शिक्षा को महत्व देने के साथ-साथ वे लौकिक और जीवनयापन में सहायक विषयों को पढ़ाने के भी समर्थक थे। इसलिए उन्होंने आयुर्वेद, धनुर्वेद, अर्थशास्त्र के अध्ययन और गंधर्वशास्त्र (संगीत, गान, वादित्र आदि) तथा स्त्रियों के लिए पाक कला की जानकारी आवश्यक बताई।

अन्य ग्रन्थों में शिक्षा - सत्यार्थप्रकाश के अतिरिक्त उन्होंने अपने अन्य ग्रन्थों में शिक्षा के विषय को लिया है। संस्कार विधि में वेदारम्भ में संस्कार के विवेचन में स्वामी जी ने पाठ्यक्रम का निर्धारण किया तथा तैत्रिरीयोपनिषद् में आये दीक्षान्त प्रवचन को उद्धृत किया। उन्होंने उपवेदों के अध्ययन पर जोर दिया जो मुख्यतः (Secular Education) के मूल स्त्रोत हैं। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के ब्रह्मचर्य आश्रम प्रकरण में उन्होंने अपने शिक्षा विषयक सूत्रों को पुनः प्रस्तुत किया है। वेदांग-प्रकाश व वर्णोच्चारण शिक्षा ग्रन्थ बालकों को शुद्ध उच्चारण का महत्व बतलाते हैं। व्यवहार भानु में व्यक्ति, परिवार, समाज तथा सभा में बरते जाने वाले शिष्टाचार की शिक्षा है तो संस्कृत वाक्य प्रबोध संस्कृत के माध्यम से जीवन के विविध क्षेत्रों में परस्पर संवाद को सिखाने का ग्रन्थ है।

सह शिक्षा अभिशाप है - यद्यपि आज सह शिक्षा को सामान्य स्वीकृति मिल चुकी है तथापि इसकी हानियों से भी हम परिचित हैं। विपरीत लिंग के प्रति किशोर अवस्था में आकर्षित होना सर्वथा स्वाभाविक एवं मानव प्रकृति के अनुकूल है। यही कारण था कि प्राचीनकाल में बालक और बालिकाओं के शिक्षण के लिये पृथक् पाठशालाएं स्थापित की जाती थी। इसी मनोवैज्ञानिक आधार पर स्वामी दयानंद ने अपने शिक्षा विषयक सिद्धान्त में बालक-बालिकाओं के विद्यालयों को निश्चित दूरी पर रखने को कहा था। पाश्चात्य देशों में जहां लड़के और लड़कियां निरंतर, निर्बाध एक-दूसरे के सम्पर्क में आते हैं, वहां उनके चारित्रिक पतन के अवसर भी पर्याप्त रहते हैं। लाला लाजपत राय ने अपने ग्रन्थ अनहैप्पी इण्डिया में लिखा था कि कार जैसी सुविधा जिन लड़के-लड़कियों को सहज प्राप्त है, वे प्रेमी युग्म शाला के मध्यकालीन अवकाश में फुर हो जाते हैं और पूछने पर उनका उत्तर होता है (We had a Good Time) उनका यह पलायन है। यह तो निश्चित है कि यौन सम्बन्ध बनाने के लिए विद्यार्थी काल तो कतई उपयुक्त नहीं है।

कला कौशल और तकनीकी शिक्षा - स्वामी दयानन्द देश में औद्योगिक कला - कौशल तथा तकनीकी प्रशिक्षण का विस्तार देखना चाहते थे। उस समय यूरोप में आई औद्योगिक क्रान्ति के कारण सर्वत्र नये-नये कल-कारखानों तथा औद्योगिक इकाइयों की स्थापना हो रही थी। स्वामी जी की प्रबल इच्छा थी कि भारत के युवकों को इस औद्योगिक प्रशिक्षण के लिये यूरोप भेजा जाये, जहां रहकर वे नवीन ज्ञान विज्ञान तथा कला कौशल की शिक्षा प्राप्त करें। इसी महत् संकल्प की पूर्ति के लिये उन्होंने जर्मनी के एक शिक्षा विशेषज्ञ प्रो. बीज से पत्राचार किया और उन्हें इस बात के लिये राजी किया कि वे भारत के इन युवकों को विविध कला-कौशल तथा व्यावसायिक उद्योगों का शिक्षण प्रदान करने के साधनों की जानकारी दें। उनकी यह योजना १८८३ में उनके असामयिक निधन के कारण आगे नहीं बढ़ सकी।

दयानन्द के परवर्तीकाल में आर्य समाज का शिक्षा विषयक कार्य-

जैसा कि हम देख चुके है कि स्वामी दयानन्द ने आदर्श शिक्षा पद्धति की एक सैद्धान्तिक रूपरेखा प्रस्तुत कर दी थी। इसका क्रियान्वयन इनके निधन के पश्चात् उनके स्मारक रूप में स्थापित दयानंद ऐंग्लो वैदिक कॉलेज, लाहौर की १८८६ में स्थापना के रूप में हुआ। जब यह अनुभव किया गया कि डीएवी संस्थाओं में संस्कृत तथा विशेष रूप से वेदादि शास्त्रों के उच्च स्तरीय अध्ययन की ओर संचालकों का ध्यान नहीं है तो विशुद्ध भारतीय शिक्षा प्रणाली के प्रचलन के लिये महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद) ने १९०२ में गंगा के तटवर्ती ग्राम कांगड़ी में गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की। उपर्युक्त दोनों शिक्षण संस्थाओं की प्रगति तथा उपलब्धियों की पृथकशः समीक्षा की जानी आवश्यक है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा में सभी को समान अवसर प्राप्त कराने, सादगी युक्त छात्रावस्था व्यतीत करने, अकादमिक (शास्त्रीय) तथा जीवनयापन में उपयोगी शिक्षा के समुचित समन्वय, सर्व सुलभ सस्ती शिक्षा देने, छात्र एवं अध्यापक के निकट रहकर आश्रम जीवन व्यतीत करने आदि शैक्षिक आदर्शो की आज के समय में भी निर्विवाद प्रासंगिकता है।

३/५ शंकर कालोनी, श्री गंगानगर

पादटिप्पणियां :-

१. English education would train up a class of persons Indian in blood and colour but English in tastes, in opinion, in moral and in intellect.

२. No Hindu who has received in English education ever remains sincerely attached to his religion.

३. द्रष्टव्य A Letter on English Education Collected works of Raja Ram Mohan Roy Panini office, Allahabad quoted in महर्षि दयानन्द और राजा राम मोहन राय, डॉ. भवानीलाल भारतीय १९५७ - आर्य प्रकाश पुस्तकालय, आगरा।

४. आज यह गुरुकुल न्यूनाधिक एक आधुनिक विश्वविद्यालय का रूप ले चुका है। यहां पुरातन शैक्षिक आदर्शो की अनुपालना प्रायः नहीं होती।

५. द्रष्टव्य- सत्यार्थ प्रकाश- तृतीय समुल्लास।

६. द्रष्टव्य - गुरुकुल कांगड़ी के साठ वर्ष।

७. कालान्तर में पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने आर्ष प्रणाली से संस्कृत शिक्षण की पाठविधि बनाई तथा अनेक स्थानों पर संस्कृत शिक्षण शिविरों को चलाकर इसे व्यावहारिक रूप दिया।

८. संस्कृत व्याकरण के अध्ययन में आर्ष ग्रन्थों को महत्व देने का मौलिक विचार दण्डी विरजानन्द के मानस में जन्मा था। दयानन्द ने इसे पुष्पित और पल्लवित कर सभी शास्त्रों के अध्ययन में समान रूप से व्यवहार्य बताया।

९. स्वामी दयानन्द को लिखे प्रो. वीज के ये पत्र मूलतः अंग्रेजी में है जिन्हें इन पंक्तियों के लेखक ने हिन्दी में अनूदित दिया है।

१०. विस्तार के लिए देखे- डॉ. सरस्वती पण्डित का शोध ग्रन्थ - Contribution of Arya Samaj to Indian Education.

सनातन अध्यात्म

न संचित कर अध्यात्म गुणों को,
गुण यही, सनातन रहता है।
लौकिक सम्पदा, है क्षण भंगुर प्यारे,
यह संग सदा नहीं रहता है।।
जब पास हो तेरे लौकिक सम्पदा,
जुड़े रहे थे, तेरे संबंधी सारे,
साथ छोड़ देंगे तेरा उस दिन
जिस दिन अक्षम हो जाएगा प्यारे।।
ओ३म्कार स्मरण, सदा साथ रख,
यह सदा सनातन रहता है
लौकिक ....
'स्मरण-ध्यान की जोड़ सम्पदा
व धरा तीर्थ बन जायेगा,
परमात्म कृपा के पात्र बनेगा
तेरा जन्म सफल हो जायेगा
ओ३म् ओ३म् ओ३म्कार ध्यान कर
अंध विश्वास न इसमें रहता है
लौकिक...............
वह निराकार तेरा साकार कृत्य क्यों
अध्यात्म चक्षु से दरश हो इसका
सत्य है कड़ुवा है जीवन कल्पित
व साध्य, साधना है जीवन का
'सागर' अध्यात्म चिन्तन दर्शाए
जहाँ ईश सनातन रहता है।
लौकिक..........

रचयिता-डॉ. बी.पी. सागर
(अंतरंग सदस्य)
आ.प्र.स.उ.प्र. (लखनऊ)

महर्षि दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

संसार में भारतवर्ष की पुण्यधरा को यह परमपिता परमात्मा की विशेष अनुकम्पा प्राप्त है कि समय समय पर यहां ऐसी पवित्र आत्माओं ने जन्म लिया है जिनके द्वारा भारतवर्ष की गरिमा पूरे विश्व में स्थापित हुई है जब देश में सर्वत्र हाहाकार मच रहा था। गौ, विधवा, दलित, दुखिया त्राहि-त्राहि कर रहे थे, धर्म कर्म केवल चौके चूल्हे तक ही सीमित रह गया था वेदों का पठन पाठन समाप्त हो गया था, विदेशी लोग वेदों को गड़रियों के गीत तक कहने लगे थे। धार्मिक व्यक्ति कर्म से नहीं अपितु माला तिलक से ही जाने जाते थे। लोग भ्रांति के सागर रुपी भंवर में फंस गये थे, अभिमन्यु जैसे चक्रव्यूह में प्रवेश कर बाहर नहीं निकल पाया था उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति धर्माधिकारियों के चक्रजाल में फँसकर अपने जीवन में अनेक कष्टों से विनाश लीला देख रहे थे। रक्षक कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था, सभी भक्षक बन गये थे। ऐसे घोर संकट में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने टंकारा की पवित्र धरती पर जन्म लिया। उनके आगमन से मानों काली काली घटाओं के बादल छिन्न भिन्न हो गये है। ज्ञान का प्रकाश सत्यार्थ प्रकाश के रूप में सूर्य बनकर आया और अविद्या अन्धकार को नष्ट कर दिया। स्वामी जी महाराज के व्यक्तित्व पर जब थोड़ा सा भी चिन्तन किया जाता है तो वह बहु आयामी व्यक्तित्व दृष्टिगोचर होता है जिसे देखकर प्रत्येक व्यक्ति का मस्तिष्क उनके चरणों में झुक जाता हैं। उनकी लम्बी लम्बी भुजायें, उन्नत वक्षस्थल ओज तेज से परिपूर्ण देदीप्यमान नेत्र, प्रातःकालीन आभा की तरह शरीर धारण किये जिधर भी निकल पड़ते थे लोगों की आंखें उनके दर्शनों के लिए तरसती रहती थी। उनकी चाल मदमस्त हाथी और शार्दूल की तरह थी। जब वे चलते थे लोग दौड़कर उनका साथ निभा पाते थे उनका तेजस्वी वर्चस्वी चेहरा अबालबृद्ध को प्रभावित करता था। ऐसे व्यक्तित्व के धनी के बारे में महर्षि योगी अरविन्द ने लिखा है - ''जब कभी महापुरूषों एवं ऋषियों का इतिहास लिखा जायेगा उस समय महर्षि दयानन्द का नाम हिमालय की चोटी की तरह सबसे ऊपर रहेगा। वे वास्तव में सागर से भी गंभीर और उदात्त भावनाओं में हिमालय से भी ऊँचे थे। संसार के सारे महापुरूषों की विशेषताओं को एक ही स्थान पर संग्रहीत कर मानों ब्रह्मा ने महर्षि दयानन्द का निर्माण किया था क्योंकि वे एकेश्वरवाद की व्याख्या करते तो लगता था कि मानों जैसे मोहम्मद हजरत खुदा की व्याख्या कर रहें हो तथा जब वे दीन हीन गरीबों के प्रति दयालु होते तो लगता था कि प्रभु ईशू बनकर उनके कष्टों का निवारण कर रहे हैं। वैराग्य अवस्था में माता-पिता के घर को छोड़कर जाते समय लग रहा था कि वैराग्य में महात्मा बुद्ध का रूप धारण कर लिया है। वन-वन में घूम कर तपस्या में लीन अवस्था में देखकर लगता था जैसे भगवान राम बनवास का समय व्यतीत कर रहे हैं। आत्मा की अमरता का संदेश देते समय लगता था कि भगवान कृष्ण बनकर गीता का अमर संदेश अर्जुन को सुना रहे हैं। इसी प्रकार वैदिक धर्म रक्षा में तत्पर उनके व्यक्तित्व को देखकर छत्रपति शिवाजी का रूप दिखाई देता था और देश की रक्षा तथा स्वाभिमान वीरता की प्रतिमूर्ति से महाराणा प्रताप की याद दिलाते दिखाई देते थे। गुरुनानक की तरह ग्राम ग्राम घूमकर शान्ति का उपदेश देकर लोगों में धर्म के प्रति भातृत्व की भावना एवं सात्विकता योगसाधना के प्रति भरपूर प्रचार करते थे। उनके जीवन की प्रत्येक विधा किसी न किसी विशेषता से विभूषित कर रही थी इस समय तक के महापुरूषों में ब्र. हनुमान, ब्र. देवव्रत (भीष्म पितामह) किसी न किसी स्वार्थ से ब्र. थे लेकिन गुरूवर देव दयानन्द ने ब्रह्मचर्य का व्रत यदि धारण किया था तो स्वार्थ के लिए नहीं अपितु परोपकार में हमारी पीड़ा को दूर करने के लिए किया था अपने गुरूवर को दी गई प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए किया था। वेदों के विद्वान-वक्ता-वीर-बहादुर-बलवान, परोपकारी, तपस्वी, सहिष्णु, निर्लोभी, देशभक्त-योगी-ईशभक्त दयालु, करूणा के सागर समाज सुधारक, कर्मठ योद्धा, शास्त्रार्थ महारथी, वेदभक्त, ब्रह्मचर्य की साक्षात मूर्ति, वैदिक धर्म के पुनरूद्धारक, युग प्रवर्तक, ब्रह्मर्षि आर्ष विधा के प्रबल समर्थक, गुरूवर प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी के अनुपम शिष्य महर्षि देव दयानन्द सरस्वती इन सारी विशेषताओं के पुंज थे। हमें भी ऐसे महापुरुष गुरूवर के शिष्य होने का गर्व होना चाहिए। जिन वेदों को गड़रियों का गीत कहा जाता था, आज उन वेदों पर अनुसंधान करके विश्व के कल्याण के लिए उसका सदुपयोग किया जा रहा है यदि आप उनका कर्तव्य देखना चाहते हैं तो उनके साहित्य और विचार प्रवाह को देखें किसी वर्ग विशेष अथवा देश विशेष के लिए नहीं है अपितु संसार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य बनाकर मानवमात्र क्या प्राणी मात्र को उपकृत किया है तथा प्राणिमात्र के कल्याण की योजना में गोरक्षा पर विशेष ध्यान दिया है ''गो करूणानिधि पुस्तिका'' गो कृष्यादि रक्षिणी सभा से देश का आर्थिक आधार सुदृढ़ करते हुए उनकी विशेषताओं का वर्णन किया है उन्होंने सर्वेक्षण में स्पष्ट किया है कि एक गाय अपने जीवन में दूध से तथा बच्चों द्वारा अन्न पैदा करने से अपनी पीढ़ी द्वारा ४१०४४० लोगों का भरण पोषण कर रही है तथा उसे मारकर खा जाने से मात्र ८० लोगों की पूर्ति होती है। यह विज्ञान स्वामी जी की बुद्धि का ही चमत्कार है इसी प्रकार भेड़ बकरी आदि अन्य प्राणियों का संरक्षण करने पर विशेष बल दिया है। पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ विज्ञान की संरचना ''पंच महायज्ञ विधि'' के रूप में की है तथा ''संस्कार विधि'' के माध्यम से मूल की भूल को निकालकर आने वाली पीढ़ी को सुस्कारित कर मानव से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र, राष्ट्र से विश्व को सभ्य नागरिक बनाने की योजना को स्थापित किया है।

यह मानव निर्माणशाला मानव जाति के ऊपर महान उपकार है। इसी प्रकार राज्य व्यवस्था को सुन्दर बनाने का कार्यक्रम बनाया एवं गुरूकुल शिक्षा के माध्यम से सर्वांगीण विकास की शिक्षा का प्रावधान किया है जो थोड़े खर्चे में उन्नत व्यक्तित्व का विकास हो सकें। यह आज की खर्चीली शिक्षा के लिए एक चुनौती है स्वामी जी के कार्यो की श्रृंखला पिछली शताब्दी से आज तक निरन्तर चल रही है जिसमें नारी शिक्षा, दलित वर्ग भेद भाव की समाप्ति, सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन मुख्य रूप से है आज ग्राम प्रधान से लेकर मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति जैसे गौरवपूर्ण पदों पर आज महिलाओं का वर्चस्व है यह सब स्वामी जी की योजनाओं का स्वरूप है, यह प्रभाव मुसलमानों और ईसाइयों में भी है जिसका प्रमाण खालिदा बेगम एवं बेनज़ीर भुट्टो हैं इसी प्रकार दलित वर्ग में उ.प्र. की मुख्यमंत्री रही बहिन कु. मायावती जी, लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार तथा श्री चन्द्रभान जी राज्यपाल वी.पी. मौर्या, श्री जगजीवन राम, जैसे उच्च पदों पर प्रतिष्ठाप्राप्त लोग महर्षि की कृपा का ही परिणाम है। आज हमारे देश की दुर्दशा स्वार्थी, पदलोलुप, देश द्रोही लोगों के कारण है अन्यथा स्वामी जी का ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' अभी तक साकार हो गया होता। स्वामी श्रद्धानन्द जी का शुद्धिचक्र सुदर्शन बनकर नवीन क्रांति कर रहा था और औरंगजेब के पापों को धो रहा था लेकिन वोट के लालची देशद्रोहियों ने उस कार्य में बाधा डालकर देश को तीन भागों में बांट दिया। आज फिर आवश्यकता है उनके अधूरे कार्य को पूरा करने की। स्वामी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर एक शायर ने बहुत सुन्दर लिखा है-

गिने जायें मुमकिन है सेहरा के जर्रे
समुन्दर के कतरे फलक के सितारे।
दयानन्द स्वामी! मगर तेरे अहसान है इतने
न गिनती में आये कभी हमसे सारे।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विषय में जितना लिखा जाये उतना ही कम है। जितना बोला जाय, सुना जाये उतना ही कम है। आओ आर्य वीरों!, पुत्रों! देश के कर्णधार सेनानी, बुद्धिजीवी वर्ग, आर्यगण, देशभक्तो! धर्म की रक्षा के लिए, वेद की रक्षा के लिए, संस्कृति की व सभ्यता की रक्षा के लिए महर्षि की आत्मा आपको पुकार रही है कि आर्य समाज के कार्य से भारत के भाग्य का द्वार खोल दो और संसार में देश की प्रतिष्ठा को गौरवान्वित करो। इस देश की मिट्टी को बदनामी से बचाओ, इसकी गरिमा को बढ़ाओ। आशा है देश-धर्म की रक्षा के व्रती संकल्प लेकर अपने गुरूवर के स्वप्न को साकार करने के लिए अपने जीवन का सदुपयोग कर सार्थक करेंगे।

।। इति।।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मुख्य संचालक,
आर्य वीर दल, उ.प्र.,
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा. उ.प्र.

thearyasamaj.org

शिव भक्तों को शिव का सन्देश

आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा

ओ३म् पदवाच्य परमात्म ब्रह्म अजर है अमर है, निराकार स्वरूप है। वह शिव =कल्याण करने वाला है वह नित्य पवित्र है वह सत्य स्वरूप सत्ता है। उपनिषद में कहा है-

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म। तैत्ति. उप. २/१।।

अर्थात् वह ब्रह्म सत्य स्वरूप है, ज्ञान रूप है, अनन्तम=अनन्त सर्वव्यापक है, आदि अन्त से रहित, है, ब्रह्म=सबसे बड़ा है।

उपास्य परमब्रह्म

यह सत्य स्वरूप निराकार परब्रह्म सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का शासक है। वह ही सबका उपास्य है। वेद में सर्व शासक की उपासना का निर्देश करते हुए कहा है-

यः प्राणतो निमिषत्तो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव। यऽईशेऽस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। यजु. २३/३।।

अर्थात् यः=जो परमात्मा, प्राणतः = प्राण वाले और निमिषत=अप्राणी रूप, जगतः=जगत का महित्वा=अपने अनन्त महिमा से, एक इत्=एक ही राजा, बभूव= शासन करने वाला है, यः=जो अस्य=इस जगत के, द्विपदः चतुष्पदः=दो पैर वाले मनुष्य आदि और गौ, अश्व आदि चौपाये प्राणियों के शरीर की, ईशे=रचना करता है, उनको ऐश्वर्य प्रदान करता है, उस कस्मै=सुख स्वरूप, देवाय=दिव्यस्वरूप ऐश्वर्य प्रदाता परमात्मा के लिए, हविषा=विशेष भक्तिभाव से, विधेम=ध्यान कर उपासना करें।

मंत्र का भाव है जो जड़ चेतन जगत का आधार और शासक है, मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष आदि के शरीरों का निर्माण करता है एवं उन्हें कर्म करने का ऐश्वर्य प्रदान करता है वह परमात्मा उपास्य है, उसकी ही उपासना करने योग्य है।

यह शिवरात्रि का पर्व परमात्मा की उपासना का प्रेरक पर्व हैं। इस पर्व पर भक्त जन शिव=कल्याणकारक परमात्मा को प्राप्त करने के लिए व्रत, उपवास करते है। नगर ग्राम ग्राम में स्थापित शिव मंदिरों में जलधारा, पुष्पमाला, बेलपत्र, चन्दन आदि चढ़ाते हैं, नर्तन, कीर्तन, करते हुए जगते जगाते हैं। अपनी समझ के अनुसार शिव की प्राप्ति के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं। भक्तों के शिव प्राप्ति के ये उपाय निरर्थक उपाय हैं क्योंकि ये उपाय आडम्बर स्वरूप हैं।

शिव प्राप्ति का उपाय सत्य

निराकार सत्य स्वरूप शिव ब्रह्म की प्राप्ति उपलब्धि का मार्ग बताते हुए मुण्डकोपनिषद् का निर्देश है-

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो य पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः।। मुण्ड. ३/१/५

अर्थात् सत्येन=सत्य स्वरूप परमात्मा सत्य से लभ्यः=प्राप्त होता है, हि एषः=यह निश्चय से, आत्मा=परब्रह्म तपसा=स्वाध्याय से (तपो हि स्वाध्यायः तैत्ति.आ. २/१४/२) सम्यग् ज्ञानेन=सही ज्ञान से, ब्रह्मचर्येण=ब्रह्मचर्य से, नित्यम्=नित्य अभ्याहत रूप से प्राप्त होता है यह ब्रह्म ज्योतिर्मय=प्रकाशकुंज रूप, शुभ्र=निर्मल दीप्त, हि=ही, अतः शरीरे=शरीर के अन्दर विद्यमान है, यम् = जिसको, क्षीणदोषा = शरीर, मन, बुद्धि आदि के मल को नष्ट वाले, यतयः = यती, संयमी, पश्यन्ति=साक्षात्कार करते हैं।

उपनिषद वचन का तात्पर्य है कि परमात्मा सत्यस्वरूप है, निराकार है और वह सत्यस्वरूप सत्य से ही प्राप्त होता है। स्वाध्याय सही ज्ञान एवं ब्रह्मचर्येण=इन्द्रियों के नियमन से प्राप्त होता है और उसे प्राप्त करने के लिए अन्यत्र भटकने की आवश्यकता नहीं है। यह तो सत्य स्वरूप शुभ्र ज्योतिर्मय रूप से अन्दर है, शरीरों में विद्यमान है। ज्योतिर्मय शिव ब्रह्म को वे ही लोग प्राप्त करते हैं, साक्षात्कार करते हैं जो क्षीणदोष होते हैं, जिनके राग, द्वेष, लोभ, मोह, काम आदि दोष नष्ट हो जाते हैं।

असत्याचरण के नमूने

आज शिव भक्त सत्याचरण के महत्व वाले नहीं है। झूठ, ईर्ष्या, द्वेष, काम, लोभ, मोह आदि से प्रायः सभी ग्रस्त हैं, असत्याचरण का सर्वत्र साम्राज्य है। व्यक्ति, परिवार, समाज, सेवा, सत्ता अध्यात्म आदि में लगे सभी असत्याचरण से लिप्त है। व्यक्ति का जीवन खरा जीवन नहीं है। खोटेपन का दाग लगा हुआ है, रहता कही है बताता कहीं है। परिवार को देखें तो परिवार के लोग एक दूसरे को झूठ बोलकर सम्पत्तियों पर अधिकार जमा रहे हैं। विद्यार्थी झूठ के सहारे डिग्रियां बटोर रहे हैं। शिक्षक पैसे लूट रहे हैं, संताने चरित्रहीन हो रही है, वकील दोषी को छोड़ रहे हैं और निर्दोषों को जेल भेज रहे हैं। व्यापारी मिलावट के पदार्थ बेच रहे हैं, शासनाधिकारी राष्ट्रीय सम्पत्ति का घोटाला कर रहे हैं, अध्यात्मवादी भोग, विलास के तहखाने बना रहे हैं, स्त्री जाति की अस्मिता से खिलवाड़ कर रहे हैं एवं ईश्वर के नाम पर मत मतान्तर खड़े कर रहे हैं। जहां से भी देखें बस असत्याचरण ही असत्याचरण उद्दीप्त हो रहा है। सत्याचरण बस पशुओं में होता दिखाई दे रहा है। पशु ही है जो न किसी को धोखा देते हैं और न किसी को ठगते हैं।

शिवभक्तों को शिव का संदेश

सृष्टि के प्रत्येक मनुष्य का परमात्मा को प्राप्त करने का अधिकार है वह अधिकार तभी सफलीभूत हो सकता है जब सत्य का आचरण होवें। सत्य के आचरण से परमात्मा की प्राप्ति के द्वार, मार्ग, खुल जाते हैं। सत्य मनुष्यता की पहचान है उत्तमता का आधार हैं। सत्य से ही जय होती है, सत्य से ही धन, सम्पत्ति बढ़ती है बहुत से लोग मानते हैं कि हार, जीत के प्रसंगों में झूठे गवाह न हो, तो जीत असम्भव है सत्य के द्वारा व्यापार नहीं चलेगा आदि आदि कथनमात्र आत्म धोखा है क्योंकि झूठ के कार्य तभी तक पनपते हैं जब तक अग्रिम व्यक्ति को हमारे झूठ का पता नहीं होता। झूठ का पता लगने पर सब नष्ट हो जाता है।

सत्य ही सुख और कल्याण का कारक है, असत्य नहीं है। असत्याचरण जहां दूसरों के लिए हानिकारक है वहाँ अपने लिए भी हानिकर है। मनु महाराज तो यहाँ तक कहते हैं कि झूठ अधर्म से कमाये हुए धन का दण्ड जन्म जन्मान्तरों तक भोगना पड़ता है। यथा- यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत् पुत्रेषु नप्तृषु। न त्वेवन्तु कृतोऽधर्मः कर्तुर्भवति निष्फलः।। मनु. ४/१७३

अर्थात् असत्य अधर्म का फल यदि असत्य अधर्म करने वाले व्यक्ति की विद्यमानता से न मिल पायें तो उसका फल पुत्रों को मिलता है, यदि पुत्रों को न मिले तो नाती=पौत्रों को अवश्य मिलता है। पर ऐसा कभी नहीं होता कि किया गया अधर्म निष्फल हो जाये। तात्पर्य हुआ झूठ, धोखा, अधर्म आदि का फल अवश्य ही मिलता है।

जीवन सत्यमय बने, धर्मपूर्वक कर्म हो, एतदर्थ परब्रह्म शिव का संदेश है। शिवो भूः सखा, अर्थात् हे मित्र जीव तुम शिव=मंगलकारी होओ। पूरा मंत्र है

एते स्तोमा नरो नृतम तुभ्यमस्मद्र्यचो ददतो मघानि।
तेषामिन्द्र वृत्रहत्ये शिवो भूः सखा च शूरोऽविता च नृणाम्।। ऋ.७/१९/१०

अर्थात् हे नराम=मनुष्यों के मध्य, नृतम=उत्तम मनुष्य बन, एतेस्तोमा=ये प्रशंसनीय कर्म एवं मघानि=धन, ऐश्वर्य अस्मदंच= मुझसे दीप्त हुए, तुभ्यं ददत=तुम्हें प्रदान करते हैं इन्द्र=हे ऐश्वर्यशाली जीवात्मन, तेषां नृणाम्=उन मनुष्यों के मध्य, वृत्रहत्ये=शत्रुओं को दूर करने के लिए, शूर=पराक्रमी होओ, च अविता=और रक्षा करने वाले बनो, च=और, सखा=मेरे मित्र= शिवो भू=कल्याणकारी बनो।

तात्पर्य हुआ कि परमपिता परमात्मा ने अनेक प्रशंसनीय उत्तम धन, धान्य प्रदान किये हैं, वे ईश्वर के उत्तम दान, मनुष्यों में उत्तम मनुष्य के लिए है और उस मनुष्य के लिए है जो पराक्रम कर दूसरों की और अपनी बुराईयों को दूर करते हैं एवं सबका शिवः=कल्याण, भूः=करते हैं।

जीवात्मा परमात्मा का अनादि काल से मित्र है। परमात्मा शिव है, सत्य स्वरूप है तो उसका उपासक सत्यं शिवं सुन्दरम् का उद्घोष करने वाला जीवात्मा भी सत्याचरण कल्याण करने वाला होवें, यह शिवरात्रि का शिव परमात्मा का सन्देश है।

सत्य का लाभ-

सत्य और असत्य दो विरोधी धर्म है। ये विरोधी ही नहीं नितान्त घातक भी है। सत्य का मन, वचन, कर्म से धारण करने वाला व्यक्ति देव बन जाता है। एवं असत्य अधर्म का आचरण करने वाला व्यक्ति खाने पीने जीने वाला सामान्य मनुष्य ही रहता है। शतपथ ब्राह्मण ने कहा है-

सत्यं चैवानृत च सत्यमेव देवा अनृतं मनुष्याः.....।

स वै सत्यमेव वदेत्, एतद्ध वै देवा व्रतं चरन्ति यत् सत्यं तस्मात् ते यशो ह भवति। शत. ब्रा. १/१/१/४-५।।

अर्थात् सत्य और अनृत ये दो हैं। देव सत्य है मनुष्य अनृत=झूठ हैं। यह निश्चय से सत्य ही बोले इसके लिए देव सत्यरूपी व्रत का आचरण करते हैं इससे उनको यश प्राप्त होता है।

स्वर्ग=सुख विशेष कौन नहीं चाहता? सभी सुख की कामना करते हैं, ईश्वर से याचना करते हैं। उस सुख विशेष का निमित्त सत्य है। तैत्तिरीय आरण्यक में सत्यं परम, परं सत्यम, सत्येन च सुवर्गाल्लोकाच्च्यवन्ते कदाचन, सतां हि सत्यं तस्मात् सत्ये रमन्ते।। तैत्ति.आ. १०/६२।।

अर्थात सत्य परम्=उत्कृष्ट है उत्कृष्टता ही सत्य है। सत्य के आचरण से कोई भी कभी भी सुवर्गात्=सुख विशेष से च्युत नहीं होते। सत्य सन्मार्ग पर चलना सत्पुरुषों का आचरण है, अतः उदबुद्ध जन सत्य में ही रमण करते हैं।

तात्पर्य हुआ सत्य आचरण से मनुष्य देवता बनता है अधर्म छूट जाता है। सत्य के आचरण से यश, कीर्ति प्राप्त होती है, समस्त सुख ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। सत्य के आचरण से व्यक्ति सुख से कभी दूर नहीं होता। सत्य सज्जन बनाता है। यास्क कहते है - सत्यं कस्मात्? सत्सु तायते, सत्प्रभवं भवतीति वा, निरु. ३/३/१३ अर्थात् सत्य सज्जनों में विद्यमान रहता है, सज्जनों में सत्य विस्तृत पालित होता है।

महर्षि दयानन्द में सन्देश का आधान-

शिवरात्रि के इस संदेश का आधान गुजरात के टंकारा ग्राम के निवासी महर्षि दयानन्द के हृदय में फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी शिवरात्रि को हुआ था। महर्षि ने सत्य शिव की अन्वेषणा की, साथ ही सत्य के ग्रहण के लिए अपने ग्रंथों में यथावसर बहुत निर्देश दिये। आर्य समाज के चतुर्थ नियम में उन्होंने लिखा है-

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

व्यवहारभानु में महर्षि ने सत्य की महत्ता बताते हुए लिखा है-

सत्य से चल के धार्मिक ऋषि लोग जहां सत्य की निधि परमात्मा है उसको प्राप्त कर आनन्दित हुए थे और अब भी होते हैं। व्यवहार.पृ.४३।।

जो सब व्यवहारों में झूठ को छोड़कर सत्य ही कहते हैं, उसको लाभ ही लाभ होते हैं, हानि कभी नहीं। क्योंकि सत्य व्यवहार करने का नाम धर्म, और विपरीत का नाम अधर्म है। व्याव. पृ. ४२।।

महर्षि दयानन्द ने शिवरात्रि पर्व पर निराकार घट घट व्यापी सत्यस्वरूप कल्याणकारी शिव ओम् पदवाच्य ब्रह्म का ज्ञान स्वयं प्राप्त किया एवं सम्पूर्ण विश्व को सत्यस्वरूप ब्रह्म की उपासना का संदेश दिया। सत्यस्वरूप परब्रह्म की उपलब्धि ही मानव मात्र का कल्याण कर सकती है, अतः महर्षि ने सत्य की पहचान का मार्ग प्रशस्त किया। प्रत्येक मनुष्य सत्य करे, सत्य जाने, सत्य माने, यह महर्षि की प्रेरणा है एवं शिवरात्रि का संदेश है।

सम्पर्क
आर्य कन्या गुरुकुल
शिवकुंज, सिरोही

thearyasamaj.org

दयानन्द ऋषिवर महान्!

-देवनारायण भारद्वाज

विश्व-मनुजता के महाप्राण, हे दयानन्द ऋषिवर महान् !
सोया संसार आर्यो का, छाया अज्ञान अंधेरा था।
थे रवि-शशि तारक दीप बुझे, रजनी से दूर सवेरा था।।
मिट रही नित्य मानवता थी, कुरीति कुमति की करनी से।
थे कौन, हुए हम कौन हाय, अन्याय अग्नि की अरणि से ?
तब किया आपने ज्योति-दान, हे दयानन्द ऋषिवर महान् ।।१।।

दानवता के आघातों ने, मानवता को किया सव्रण था।
दलितों की करूण कराहों से, पीड़ित भारत का कण-कण था।।
हम भूल चुके थे वेदों को, था मनु-कृत-व्रत का ध्यान नहीं।
परमेश्वर पाषाण बनाया था, था शेष ईश का ज्ञान नहीं।।
तुमने ही प्रभु का दिया ज्ञान, हे दयानन्द ऋषिवर महान्।।२।।

था धर्म नहीं शुभकर्म नहीं, श्रेष्ठ सभ्यता भुला चुके थे।
खाना-पीना-सो जाना सब, स्वार्थसिद्धि के लक्ष्य चुने थे।।
शिव-राम-कृष्ण को बिसराया, जिनने संसार संभाला था।
गुण गौरव उनके ठुकराये, बस उनका नाट्य निकाला था।।
उनका समझाया कीर्तिमान, हे दयानन्द ऋषिवर महान्।।३।।

अंग्रेजों के उस शासन में, कुछ पिट्ठू मौज उड़ाते थे।
पर नन्हें बालक कृषकों के, आँसू पीकर सो जाते थे।।
स्वातन्त्र्य-मंत्र प्रथम सुनाने, ऋषि भारत में अवतीर्ण हुए।
निशि-विनाश में करके विकास, क्षत-विक्षत और विदीर्ण हुए।।
दुःखियों को कर दी शान्ति दान, हे दयानन्द ऋषिवर महान्।।४।।

शिवरात्रि पर्व पर शैव सभी, जड़-पाहन-पूजन-हित-व्रत थे।
थे बाल मूल शंकर सचेत, वे शंकर-शोधन में रत थे।
शिव शंकर सत्य खोजने में, कण-कण कैलाश छान डाला।
गृह त्याग गला निज तन ऋषि ने, ईश्वर का रहस्य शोध डाला।।
जग ने जाना ईश्वर महान्, हे दयानन्द ऋषिवर महान्।।५।।

बाधाओं और पर्वतों को, अपने पथ का सम्बल पाला।
पाखण्ड-खण्डिनी को लेकर, जग का इतिहास बदल डाला।।
निज जीवन का श्रृंगार किया, अंगारों को अपना करके।
संसृति का सूरज बन तुमने, तम मिटा दिया दफ़ना करके।
बलिदान आपका उपाख्यान, हे दयानन्द ऋषिवर महान।।६।।

अघ गोवध बन्द कराने का, ऋषिवर का सच्चा नारा था।
पशुओं पर अत्याचार देख, दुःशासन को धिक्कारा था।।
थी जिसकी महिमा राष्ट्र-निहित, कवि तुलसी के अरमानों में।
वह मिटी जा रही थी हिन्दी, पर उसे बसाया प्राणों में।।
तब कीर्ति सदा देदीप्यमान, हे दयानन्द ऋषिवर महान् ।।७।।

भारत की डूबी नौका के, तुम आकर बने सहारा थे।
शुभ दिशा दिखाने आये थे, तुम धरती के ध्रुवतारा थे।।
दिनकर बन तुमने दयानन्द, आ अन्धकार को भगा दिया।
तुमने फिर वैदिक पथ दिखला, प्रिय सोया भारत जगा दिया।।
तुम देश-जाति के स्वाभिमान, हे दयानन्द ऋषिवर महान्।।८।।

जल रहे करोड़ों दीपक थे, जब भारत की उजियाली में।
पर अपना सूरज समाज ने, देखा छिपता दीवाली में।।
सविता ने सोचा तारों से, जग-तिमिर दूर हो सकता है।
इसलिये दिवाकर सन्ध्या को दिशि पश्चिम में जा छिपता है।।
तब शेष कहां उपमान-मान, हे दयानन्द ऋषिवर महान् ।।९।।

हम आज नमस्ते करते हैं, तेरे पथ तेरे चरणों को।
फिर आर्य जनों से तेज बले, जिससे है तरना तरुणों को।।
महर्षि ! मां आज पुकार रही, फिर शौर्य ओज लाना होगा।
भारत का भाग्य जगाने को, इतिहास नया गढ़ना होगा।।
करना होगा नव बल-प्रदान, हे दयानन्द ऋषिवर महान् ।।१०।।

तुमने शिक्षा वह सिखलाई, बेकारी नहीं बढ़ाती जो।
सम्मान सिखाती गुरूओं का, उत्तम अनुशासन लाती जो।।
कन्याओं, विविध वंचितों को, शुभ शिक्षा का अधिकार दिया।
जड़ जन्म-जाति अवचेतन पर, विजयी गुण कर्म स्वभाव किया।।
तुम मानव के उद्धार-प्राण, हे दयानन्द ऋषिवर महान्।।११।।

केवल बस नहीं चन्द्रमा तक, हम सूर्य तलक जा सकते हैं।
क्या दूरभाष या दूरदर्श, हम और उच्च बढ़ सकते हैं।।
कुछ आत्मज्ञान ही नहीं मात्र, विज्ञान भरा है वेदों में।
सब दूर वायुदूषण करता, सत शुद्ध यज्ञ जो वेदों में।।
तुम शोधशील विज्ञानवान्, हे दयानन्द ऋषिवर महान्।।१२।।

अध्यक्ष, वेद मनीषा न्यास
वरेण्यम् अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग,
अलीगढ़

ऋषि दयानन्द का जन्म दिवस

-हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक

वैसे भारतवर्ष में अनेक त्योहार होते हैं पर कुछ दिवस अति महत्वधामी होते हैं। इसमें ऐसे ही दो अनुपम दिन है- एक महाशिवरात्रि वह शुभ दिन है जब बालक मूलशंकर सत्यान्वेषण की डगर पकड़ कर दयानन्द सा देव बना।

दूसरा वह शुभ दिन है जब वे १८२४ ई. में फाल्गुन माह की दशमी (कृष्णपक्ष) को गुजरात के जमींदार पिता कर्षण जी तिवारी और माता यशोदा बाई के आंगन में अवतरित हुए। वही आगे चलकर वेदज्ञ हुए और वेद ज्ञान से रहित भारत को उसके सत्यार्थ का दर्शन कराते रहे। उस समय भारत में घोर अविद्या का अंधकार छाया हुआ था, सांस्कृतिक तथा सामाजिक दशा बहुत खराब थी। तब सन् १८७५ ई. के पूर्व से ही भारत के महापुरूष ऋषि दयानन्द ने बहुत सुधार कार्य किये। ''कोई कितना करें परंतु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत मतान्तर से आग्ररहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है।'' (स.प्र.अष्टम समु.)

सर्वपल्ली राधाकृष्णन का कथन है ''स्वामी दयानन्द जी ने स्वराज्य का सबसे पहले संदेश दिया''

लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा- ''महर्षि दयानन्द महान राष्ट्रनायक नेता और क्रांतिकारी महापुरूष थे।'' यदि गांधी जी राष्ट्रपिता तो महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के पितामह थे।''

अतः ऋषि के उसी विचार से प्रेरित होकर आर्यवीरों ने स्वतंत्रता संग्राम में सर्वाधिक भाग लिया था तथा अनेकों आर्य अपने देश के प्रति शहीद हो गये थे।

यहां कुछ उन आर्य पुरूषों के नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए विदेशियों के हाथों निर्वासन यातनायें सही- १. श्री श्याम कृष्ण वर्मा २. पंजाब केशरी लाला लाजपत राय ३: मदन लाल धींगडा ४. हरदयाल एम.ए. ५. भाई अमीचन्द्र और अवध बिहारी ७. भाई बाल मुकुन्द और उनकी पत्नी ८. भाई परमानन्द ९. सोहन लाल पाठक १०. खुशीराम ११. जगतराम हरिमानवी १२. भगत सिंह १३. सुखदेव १४. बलराज भल्ला १५. रणबीर १६. राम प्रसाद बिस्मिल १७. गेंदालाल १८. रोशन सिंह १९. यशपाल २०. राजस्थान के कुंवर प्रताप सिंह २१. इनके पिता केशरी सिंह २२. और इनके दादा कृष्ण सिंह बारहट २३. देव सुमन २४. स्वामी श्रद्धानन्द २५. गया प्रसाद शुक्ल आदि इसके अलावा खुदीराम बसु, विनय, बादल और दिनेश आदि हजारों शहीद हुए।

नारियों में मातांगिनी हजरा, सरोजनी नायडू, आर्य मुवती श्रीमती २८ वर्षीय रामसखी और दुर्गादेवी आदि के नाम उल्लेखनीय है।

तात्पर्य यह है कि जिनके शिष्यों ने भारत देश के प्रति इतना कुछ किया उस ऐसे सत्योपदेशक ऋषि दयानन्द का भारत सरकार को जन्मदिवस (गुड फ्राइडे की तरह) अवश्य मनाना चाहिए।

अतः जिन अंग्रेजों ने भारत को २०० वर्ष गुलाम बनाकर रक्खा और देश को कंगाल बना दिया तथा भारत छोड़ो आन्दोलनकारियों पर जिन्होंने इतना अत्याचार और नरसंहार किया, उसी की भाषा और संस्कार को अपनाने तथा उन्हीं के धर्म गुरू ईसामसीह का गुड फ्राइडे अर्थात जन्मदिवस जिस दिन मनाया जाता है उस दिन सभी सरकारी दफ्तर बन्द रहते हैं।

महामानव के इतिहास में ऋषि दयानन्द का भी नाम है, उन्हें भी अंत में समाज सुधार करते समय एक निर्दयी धर्म के विरोधी ने विष दे दिया था।

तात्पर्य यह कि जब भारत विदेशी ईसा का गुड फ्राइडे मनाता है तो देश भक्त ऋषि दयानन्द का जन्म दिवस राष्ट्रीय पर्व के रूप में क्यों नहीं मनाया जाता।

दिसम्बर २०१२ के सत्य चक्र में जगदीश बत्रा लायलपुरी लिखते हैं कि -

ईसा को उनके विरोधी लोगों ने क्रास पर कील ठोंक कर लटकाया, उन विरोधियों के लिये परमात्मा पुत्र ईसा ने परमात्मा से उनको माफ करने की विनती की। उन्हें नहीं पता था कि उनके अपने अनुयायी ईस्ट इंडिया कंपनी बनाकर भारत पर कब्जा करके लूटेंगे तथा जलियांवाले बाग में निर्दोष निहत्थों को गोलियों से भूनेंगे। क्या इसके लिये भी ईसा ने परमात्मा से माफ करने की विनती की होगी।

भारत धर्म निरपेक्ष देश है अर्थात् संसद में मंत्रीगण किसी धर्म के पक्ष में नहीं है फिर भी वे लोग पितरपक्ष मनाते हैं। यह कैसी धर्म निरपेक्षता है?

गुजरात सरकार धर्म निरपेक्षता का अर्थ केवल हम भारतवासी हैं, लगाया है।

जब प.बंगाल और उत्तर प्रदेश आदि राज्य सरकार मस्जिद के इमामों को वेतन दे रही है तो हिन्दुस्तान में सनातन धर्म, वैदिक धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के मंदिरों के पुजारियों, पुरोहितों को क्यों नहीं वेतन दिया जाता। क्या मस्जिद के इमामों को वेतन तथा आवास देने का कोई प्रावधान संविधान में हैं?

अतः राम कृष्ण मिशन, विश्व हिंदू परिषद, हिन्दू महासभा आदि को इस संबंध में हाईकोर्ट में रिट दायर करनी चाहिए। इस संबंध में सभी मंदिरों के पुजारियों व पुरोहितों को एकजुट होकर विचार करना चाहिए।

-मु.पो. मुरारई
जिला-वीरभूम (प.बंगाल)

thearyasamaj.org

जन्म दिन और बोध दिवस पर विशेष लेख-

दयानन्द तो दयानन्द ही था!

-सत्यपाल आर्य
एम.ए. एल.एल.बी. (आनर्स)

भारतवर्ष में उन्नीसवीं शताब्दी जनजागरण का काल है। इस काल में उच्च से उच्च, महान से महान महामानवों ने जन्म लिया है। उनमें से स्वामी दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व, कृतित्व, नेतृत्व, देश-धर्म सेवा, वेदोद्धार, समाज सुधार संस्कार आदि अपनी महिमा से अलग ही स्थान रखते हैं।

योगीराज अरविन्द के शब्दों में- ''सभी महापुरूष पर्वतशिखिरों की भांति अपनी छटा, अपनी आभा, अपनी सुन्दरता अलग-अलग रूपों में प्रकट करते हैं। सभी एक दूसरे से भिन्न, मनोहर, मनोरम, दर्शनीय प्रतीत होते हैं। किंतु इन सब उत्तुंग ऋंगों में सबसे उन्नत गौरीशंकर के समान है अप्रतिम, अद्भुत, अपूर्व महर्षि दयानन्द का बहुआयामी व्यक्तित्व। निराला, विचित्र, ब्रह्मचर्य से उद्दीप्त, तपस्या से कुन्दन, आर्षज्ञान से प्रांजल, स्वर्णाभिराम, वर्णनातीत है उनका जीवन।'' (१)

ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में जन्म लेकर जिन जिन महापुरूषों ने भारतीय राष्ट्र, धर्म, समाज, संस्कृति की अपूर्व सेवा की है उनमें दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती के परम शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम अनन्यतम है। (२)

''स्वामी दयानन्द सरस्वती (१८२४-८३) उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रारम्भ हुए भारतीय पुनर्जागरण युग के महान युग निर्माताओं में से एक है। वे केवल एक सुधारक मात्र ही नहीं थे जिन्होंने भारतीय समाज व धर्म सुधार का एक प्रबल आन्दोलन आरम्भ किया वरन वे एक प्रगतिवादी चिन्तक, दार्शनिक व मनीषी थे'' (३)

''स्वामी जी महाराज पहले महापुरूष थे जो पश्चिमी देशों के मनुष्यों के भी गुरू कहलाए, जिनको अनेक पश्चिमी मनुष्य गुरू, आचार्य और धर्मपिता मानते थे।

जिस युग में स्वामी जी हुए हैं, उनसे अनेकों वर्ष पहले से आज तक ऐसा एक ही पुरूष हुआ है जो विदेशी भाषा नहीं जानता था, जिसने स्वदेश से बाहर एक पैर भी नहीं रखा था, जो स्वदेश के अन्न जल से पला था, जो विचारों से स्वदेशी था, जो आचारों से स्वदेशी था, भाषा और वेश में स्वदेशी था, किंतु वीतराग और परम विद्वान होने से सबका भक्तिभाजन बना हुआ था, जिसका देशी विदेशी सभी मान करते थे। ऊँचे से ऊँचे राजे महाराजे जिसका सम्मान करते थे, वह पुरूष महर्षि दयानन्द ही था। महर्षि को छोड़कर भारत के इस युग में एक भी पुरूष ऐसा नहीं हुआ जिसने विदेशी भाषा न सीखी हो अथवा विदेश यात्रा न की हो और फिर भी स्वदेश में सम्मानित हुआ हो। (४)

''स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन का मुख्य कार्य धर्म प्रचार था, आर्यो के धर्म को सर्वोत्तम, सबसे पुरातन और ईश्वर प्रदत्त मानते थे। आत्मज्ञान आर्य धर्म की प्रधानता का सूचक है। आत्मज्ञान से आर्यो का पहले भी उत्कर्ष हुआ है। इस तत्व के पाठ इन्होंने सब जातियों को पढ़ाये हैं, ये सारे संसार के शिक्षक रहे हैं और अब भी हैं।''

इस आत्मज्ञान के मूल स्रोत ईश्वर प्रदत्त वेद हैं। वेद से ही इस तात्विक ज्ञान का निःसरण हुआ है। इसीलिए श्री स्वामी जी की वेद में अपार भक्ति थी। वे पक्के वेदानुयायी थे। वेद विश्वास और वेद की अपौरुषेयता को स्थगित कर वे किसी से कभी भी सन्धि करने को उद्यत न थे।''

''महाराज का परमात्मदेव में परम विश्वास था। वे ईश्वर तत्व पर पूरा भरोसा रखते थे। उसी जगदीश की शान्त शरण में रहते हुए वे विपत्ति वज्रपात से भी घबराते नहीं थे। महाराज वेद विश्वास की भांति ईश्वर विश्वास के भी पक्के थे। वेदाज्ञा और एक निराकार ईश्वर भक्ति धर्म के दो अंग सार्वजनिक थे। इसी केन्द्र पर सारी जातियों को लाने के लिए आजीवन सचेष्ट रहे।''

वे प्राचीनता की दुर्गा के अनन्य प्रेम से पक्के पूजक थे। आर्यो का अतीत काल उनको स्वर्णिम आचारों और स्वर्णिम विचारों से समावृत्त स्वर्ण स्वरूप प्रतीत होता था। आर्यो की पुरानी सभ्यता की अवहेलना वे कदापि सहन नहीं कर सकते थे। उनका निश्चय था कि नवीन मतों ने महन्तों ने और मठों ने पुरातन काल की महत्ता पर मिट्टी डाल दी है।''

''महाराज सार्वजनिक हित के लिए ही हाथ में तर्क का तीर लेकर खण्डन के भूखण्ड में उतरे थे। रोगी के फोड़े फुन्सियों का जब तक छेदन न किया जाये, उसका स्वस्थ होना दुष्कर है। खेतों में से जब तक झाड झंखाड उखाड़ कर, घास फूस निकाल कर इसका शोधन न किया जाए उसमें खेती का सुफलित होना असम्भव है। ऐसे ही किसी देश और जाति में से जब तक कुरीतियों को दूर न किया जाए और उसके आचार विचार का संशोधन न हो, तब तक उसकी उन्नति के सोपान पर पदार्पण करना महाकठिन है। सुधार का कार्य सर्वप्रिय तो नहीं, परंतु सार्वजनिक हित से पूर्ण अवश्य हुआ करता है।'' खण्डन खड्ग का अवलम्बन करते समय भी महाराज के महान ह्दय में परहित पूर्ण ही रहा था।''

(४) ''स्वामी जी महाराज ने सामाजिक- सुधार में ब्रह्मचर्य पालन करना अत्यावश्यक बताया है। एक-एक दो-दो वर्ष के बालकों का विवाह करना देश के अधःपतन का कारण बताया है।

''उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था को गुण कर्म के अनुसार माना है। किसी जाति के जन का उत्तम तथा निकृष्ट होना जन्म और नाम से नहीं मानते थे।''

''महाराज शूद्रों के सुधार के बड़े पक्षपाती थे। उन्हें भी सर्जनकर्ता की सर्वश्रेष्ठ कृति समझते थे। चतुर्थ वर्ण से घृणा करना, उसे अस्पृश्य समझना उनके निकट मनुष्य पदवी से गिरा हुआ कर्म है। जो लोग कुत्तों को छूते हैं, बिल्लियों से खेलते हैं, भैंसों को हाथ लगाते हैं, ऊँटों को स्पर्श करते हैं, घृणित से घृणित जीव जन्तुओं को भी छू लेते हैं और अपने हाथ से पशुओं के चमड़े का बना जूता पहन व उतार लेते हैं, वे मनुष्यों को अछूत समझ उससे दूर भागा करें यह कितना अन्याय है, अधर्म है, महाराज शूद्रों को वेदाधिकार देते हुए लिखते हैं- ''जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द, सूर्य और अन्नादि सब पदार्थ सबके लिए बनाये हैं, वैसे ही वेद भी सब मनुष्यों के लिए प्रकाशित किए हैं।'' (५)

''श्री स्वामी जी ने स्त्री जाति के सुधार का भी परम कार्य किया है। शास्त्र रीति से उनको भी वेदाधिकार दिया है। महाराज स्त्री शिक्षा एवं स्त्रियों का महत्व वर्णन करते हुए लिखते हैं-

''स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य धारण और विद्या ग्रहण अवश्य करना चाहिए। भारत की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि देवियां शास्त्रों को पढ़कर पूरी विदुषी हुई हैं। '' देखो, आर्यावर्त्त में राजपुरूषों की स्त्रियां धनुर्वेद, युद्ध विद्या अच्छी प्रकार से जानती थी। यदि ऐसा न होता तो कैकेयी आदि स्त्रियां दशरथादि राजाओं के साथ संग्राम में कैसे जा सकती थीं? स्त्रियों को व्याकरण, धर्म, वैध गणित और शिल्प विद्या अवश्य सीखनी चाहिए।'' (६)

श्री स्वामी जी महाराज से भारतवासियों की दरिद्र दशा छिपी न थी। उन्होंने अपने विस्तृत पर्यटन में अकाल पीड़ित देशवासियों की करूणाजनक अवस्था को अपनी आँखों से देखा था। उनके ह्दयबोधक रोदन व करूण क्रन्दन को अपने कानों से सुना था। श्री स्वामी जी यह भी मानते और जानते थे कि भारत भूमि रत्नगर्भा है, सुजला है सुफला है। ऊसर नहीं किन्तु उर्वरा और शस्यशालिनी है।'' (४)

''फिर भी यहां भूख, दुर्भिक्ष और अभाव क्यों है? इसका कारण शिल्पकला का भारी अभाव है। विदेशी वस्तुओं की भरमार से यहाँ के लाखों परिश्रमी निकम्मे व बेरोजगार हो रहे हैं। उनके जीवन के अंतिम वर्षो में उनके धर्मप्रचार और समाज सुधार आदि उदात्त उद्देश्यों से भारतवर्ष में शिल्पकला विस्तारित करना भी सम्मिलित हो गया था। स्वामी जी जहां देशवासियों की आत्मिक भूख प्यास को वेदोपदेश द्वारा दूर करते थे, वहां उनकी शारीरिक क्षुत्पिपासा को उपराम करने के लिए शिल्पकला के सुदृढ़ सूत्रपात भी कर रहे थे।'' (४)

''स्वामी दयानन्द ने शिक्षा सुधार पर सबसे अधिक बल दिया है। वे जानते थे कि जब तक सर्वसाधारण में सुशिक्षा का प्रचार नहीं होता, तब तक उन्नति नहीं हो सकती। करोड़ो मनुष्यों को एक उद्देश्य पर लाने के लिए शिक्षा सबसे ऊँचा स्थान है। वह शिक्षा भी धर्मसहित और जातीय होनी चाहिए।''

ऐसे समय में जबकि मैकाले की शिक्षा नीति की बदौलत भारत का युवक पढ़ लिखकर देश, धर्म, संस्कृति से कटता जा रहा था, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में सम्पूर्ण दूसरा समुल्लास शिक्षा नीति को समर्पित किया है। तीसरे समुल्लास सहित उनके व्याख्यानों, लेखों, वेद भाष्य आदि समस्त ग्रंथ शिक्षा नीति से अछूते नहीं है।

सबके लिए समान अवसर, समान सुविधा, समान व्यवस्था की वकालत करने वाले स्वामी युग के प्रथम आचार्य थे। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में लिखते हैं-

''सबको तुल्य वस्त्र, खानपान, आसन दिये जाए चाहे वह राज कुमार हो या राजकुमारी और चाहे दरिद्र की संतान हो।'' (७)

स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन जाति पांति, छुआछूत और अमीर गरीब के बीच की खाई की सम्भावना को जड़ से नष्ट कर देता है।''

अनिवार्य शिक्षा के विषय में स्वामी दयानन्द लिखते हैं-

''राजा को योग्य है कि वह सब कन्या और लड़कों को उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखकर विद्वान कराना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उसके माता-पिता को दण्ड देना, अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का और लड़की किसी के घर में न रहने पावे किंतु आचार्य के कुल में रहे, जब तक समावर्तन का समय न आवे तब तक वह विवाह न होने पाये।'' (८)

स्वामी दयानन्द ने अनायास बाल श्रम, बाल विवाह, बंधुआवृत्ति, अशिक्षा जाति पांति, छुआछूत आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का रास्ता दिया है। स्वामी दयानन्द सह शिक्षा के परम विरोधी थे। वे स्वयंवर विवाह के पक्षपाती थे। वर्णव्यवस्था लागू करके उन्होंने श्रम और सम्पत्ति के अधिकारों की क्रांतिकारी व्यवस्था प्रदान की है।

आज आवश्यकता है समाज की सड़ी गली व्यवस्था को बदलने के लिए स्वामी दयानन्द के जीवन दर्शन पर चिन्तन और आचरण की।

७२, रैड स्क्वायर मार्किट,
हिसार, ६४१६२४१०२४
मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि
उपसभा, हरियाणा

संदर्भ ग्रंथ सूची-

१. घोष अरविन्द- आर्य समाज परिचय, लेखक-पं. उमाकान्त से उद्धृत
२. भारतीय भवानी लाल- स्वामी दयानन्द व्यक्तित्व एवं विचार, पृष्ठ-७
३. मल्होत्रा शान्ता-स्वामी दयानन्द के राजनैतिक विचार, पृष्ठ-१३
४. सत्यानन्द स्वामी- श्रीमद् दयानन्द प्रकाश पृष्ठ-१७-१८
५. सरस्वती स्वामी दयानन्द - सत्यार्थ प्रकाश
६. उपरोक्त
७. उपरोक्त
८. उपरोक्त

theaaryasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१९२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

....

....

ओ३म्

कोई प्रभु भक्त है तो विद्वान नहीं, कोई विद्वान है तो योगी नहीं, कोई योगी है तो सुधारक नहीं, कोई सुधारक है तो साहसी नहीं, कोई साहसी है तो ब्रह्मचारी नहीं, कोई ब्रह्मचारी है तो वक्ता नहीं, कोई वक्ता है तो लेखक नहीं, कोई लेखक है तो सदाचारी नहीं, कोई सदाचारी है तो परोपकारी नहीं, कोई परोपकारी है तो कर्मठ नहीं, कोई कर्मठ है तो त्यागी नहीं, कोई त्यागी है तो देशभक्त नहीं, कोई देशभक्त है तो वेदभक्त नहीं, कोई वेदभक्त है तो उदार नहीं, कोई उदार है तो शुद्ध शाकाहारी नहीं, कोई शुद्ध शाकाहारी है तो योद्धा नहीं, कोई योद्धा है तो सरल नहीं, कोई सरल है तो सुन्दर नहीं, कोई सुन्दर है तो बलिष्ठ नहीं, कोई बलिष्ठ है तो दयालु नहीं, कोई दयालु है तो संयमी नहीं।

यदि आप ये सभी गुण एक ही स्थान पर देखना चाहें तो वैदिक धर्म के पुनरूद्धारक, आर्य समाज के संस्थापक तथा वेदों के आधार पर समग्र क्रान्ति के प्रवर्तक महर्षि देव-दयानन्द को देखें, निष्पक्ष होकर देखें।

।।"है कोई और महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसा"।।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती — मंत्री
देवेन्द्र पाल वर्मा — प्रधान

आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों से निवेदन है कि आप अपना वार्षिक चित्र भेजते समय अपना मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें जिससे आपको सूचना प्रेषित करने में सुविधा रहे और सीधा सम्पर्क किया जा सकें।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती,
मंत्री

प्रदेश के समस्त आर्य समाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों से निवेदन है कि आप अपनी समाज का वार्षिक निर्वाचन यथाशीघ्र समय पर सम्पन्न कर लेवें निर्वाचन करते समय अधिष्ठाता आर्य वीर दल का अपने स्तर पर योग्य युवक का चयन अवश्यमेव करके उसकी सूचना सभा कार्यालय का अवश्य प्रदान करें। आपके द्वारा प्रेषित नाम एवं मोबाइल नम्बर की प्रतीक्षा रहेगी।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

प्रदेश के समस्त आर्य समाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा के कार्य को विधिवत् संचालन हेतु अनिवार्य अर्हताएं निश्चित की गई हैं जो निरीक्षण समय पर प्रत्येक समाज के कार्यालय में उपस्थित रहनी चाहिए-

१. सदस्यता पंजिका तिथि एवं वर्ष रसीद संख्या सहित
२. कार्यवाही पंजिका में अंतरंग एवं साधारण सभा अंकित हो।
३. साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका विवरण
४. बैंक खाता पास बुक सहित
५. कार्यालय में पत्र व्यवहार हेतु - लेटर पैड, मोहर, रसीद बुकें एवं पुराने रिकार्ड की पत्रावली सुरक्षित हो।
६. वार्षिक निर्वाचन में अधिकारियों की सूची फोन नं. सहित हो
७. आय-व्यय पंजिका, रोकड़ एवं खाता पंजिका
८. समाज भवन का मानचित्र एवं अन्य सम्पत्तियों का विवरण अंकित करना अनिवार्य होगा।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

स्वास्थ्य चर्चा-

समस्या आपकी-समाधान हमारा

आदरणीय डॉक्टर साहब,
सादर नमस्ते!

समस्या-

इधर काफी दिनों से आपका कोई समाधान आर्य मित्र में पढ़ने को नहीं मिला। क्या कारण है? आशा है आप अपने "समस्या आपकी- समाधान हमारा" लेख द्वारा हम सभी को लाभान्वित करते रहेंगे। अपनी एक निजी समस्या है मैं इधर काफी दिनों से मधुमेह (डायबिटीज) रोग से पीड़ित चल रहा हूँ अनेक अंग्रेजी दवायें खाने के बाद भी मेरी रक्त शर्करा नियमित नहीं हो पा रही हैं। अब डाक्टरों ने मुझे इन्सुलिन लेने हेतु कहा है मैं इन्सुलिन नहीं लेना चाहता हूँ। क्या मेरी इस समस्या का कोई समाधान हैं? कृपया अवगत करायें।

वेदपाल आर्य, मेरठ

समाधान- प्रिय श्री वेदपाल जी, आप समस्या आपकी-समाधान हमारा" कालम रूचिपूर्वक पढ़कर लाभान्वित हो रहे हैं, जानकर लिखना सार्थक हुआ। भविष्य में इसमें कोई व्यवधान न हो इसका ध्यान रखूँगा।

जहाँ तक आपकी समस्या का प्रश्न है तो वर्तमान में यह रोग एक गंभीर समस्या का रूप लेता जा रहा है। इसका मुख्य कारण आजकल जीवन शैली में आ रहा व्यापक परिवर्तन ही है। हमारा शारीरिक श्रम निरंतर घटता जा रहा है। वहीं दूसरी ओर स्पर्धायुक्त जीवन जीने के कारण मानसिक श्रम अधिक बढ़ता जा रहा है। आयुर्वेद में इसे एक रोग के रूप में गिना गया है। अर्थात् ऐसे लोग जिनको पूरे राज्य की चिन्ता चिन्तित करती हो तथा भोजन में सभी स्वादिष्ट पदार्थो का भरपूर सेवन हो परंतु शारीरिक क्षय न के बराबर हो।

आपने न तो अपने कार्य के बारे में उल्लिखित किया है और न ही अपनी रक्त शर्करा स्तर व खान पान के बारे में कुछ कहा है फिर भी मैं कुछ सामान्य बातें व औषधि आपको बता रहा हूँ व्यवहार में लें अवश्य लाभ होगा। संभव है कि आपको इन्सुलिन भी न लेनी पड़े।

सर्वप्रथम आप अपनी मानसिक चिन्ताओं को कम करें विशेषतः रात को सोते समय शान्ति प्रकरण के अन्त में शिव संकल्प मंत्रों का अर्थ सहित मनन करें तब अपनी समस्त समस्याओं को ईश्वर को समर्पित करें। प्रातः सूर्योदय से पूर्व बिस्तर त्याग कर शौचादि से निवृत्त होकर थोड़ी देर टहलें व हठ योग के कुछ आसनों जैसे-पवनमुक्त, पश्चिमोत्तान, अर्द्धमत्स्येन्द्र व मण्डूक आसन को धीरे धीरे यथा शक्ति आसन की परिभाषा को ध्यान में रखकर अभ्यास करें। जिससे आपके उदर में स्थित आमाशय ग्रंथी की क्रियाशीलता बढ़ेगी व इन्सुलीन स्वतः निष्कामी होकर आपकी रक्त शर्करा को नियंत्रित करेगी। इसके अतिरिक्त अपने खान पान में बदलाव लाये मीठे व कार्बोहाइड्रेट युक्त पदार्थो का कम से कम व आवश्यक हो तो छः छः घण्टे के अन्तराल पर थोड़ा थोड़ा सेवन करें। हरी सब्जियों व सलाद का भरपूर सेवन करें।

कसैले पदार्थो जैसे-करेला, नीम, जामुन, कैथा, आंवला आदि का चूर्ण, चटनी, सब्जी के रूप में लेना लाभदायक है। औषधियों में किसी अच्छी कंपनी की चन्द्रप्रभा वटी, २, २ मात्रा, वसन्त कुसुमाकर रसवटी १ x २ मात्रा व फलत्रिकादि क्वाथ ५० मिली. १ x २ मात्रा में सेवन करने से आपको निश्चितरूप से लाभ होगा।

आशा है उपरोक्त खान पान व जीवन शैली में परिवर्तन व औषधियों के सेवन द्वारा आप अपने मधुमेह रोग को नियंत्रित कर सकेंगे तथा आपको इन्सुलिन लेने की आवश्यकता भी नहीं होगी।

विशेष परामर्श हेतु मेरे दूरभाष पर सम्पर्क करने का कष्ट करें।

डॉ. भानु प्रकाश आर्य
पूर्व वरिष्ठ चिकित्सक
मोबाइल नं- ९४१५१५८५७१

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक-श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है-सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।